नाटककार

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

10 वाँ

अखिल भारतीय ऐतिहासिक

नाट्योत्सव

2019

वार मेमोरियल, दिल्ली

सभ्यता द्वार

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला-जागरण, पटना

www.chaturbhujdrama.com, apriyadarshi76@yahoo.in

सौजन्य : कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार

Scanned by CamScanner

FORTUNE 500

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

1967 से भारतीय किसान के सच्चे साथी

मिट्टी की जान, किसान की शान.

नए उत्पाद
पानी में घुलनशील व विशेष उर्वरक

उत्तम खाद, उचित दाम

FOLLOW US:
YouTube IFFCO live

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones : 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website : www.iffco.coop

Scanned by CamScanner

सहयोग : कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

दसवाँ अखिल भारतीय ऐतिहासिक

नाट्योत्सव- 2019

बिहार, पटना

4 से 6 मार्च, 2019

सम्पादक

सुनील कुमार सिन्हा

स्थान

कालिदास रंगालय, पूर्वी गाँधी मैदान, पटना

❖

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला जागरण, पटना

वेबसाइट/ईमेल : www-chaturbhujdrama.com / apriyadarshi76@yahoo.in/apriyadarshi738@gmail.com/kalajagran@rediffmail.com

Scanned by CamScanner

अध्यक्ष की कलम से

कृष्णानंद

भारतीय इतिहास-पुराण की घटनाएँ तत्कालीन समाज का दर्पण है। ऐतिहासिक पौराणिक घटनाएँ वर्त्तमान समाज का पथ प्रदर्शक होता है। अच्छी बातों को अपनाएँ और बुरी बातों से सावधान रहें। मेरे अभिन्न मित्र डॉ. चतुर्भुज ने ऐतिहासिक-पौराणिक रोचक घटनाओं को नाट्य विधा के माध्यम से जन-समुदाय के बीच परोसने का संकल्प लिया था। जन मानस के बीच रोचकता बनी रहे इसके लिए उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं की मर्यादा रखते हुए उसे वर्त्तमान से जोड़ने का प्रयास किया है। घटनाओं के तारतम्य को मिलाने के लिए वे काल्पनिक पात्रों और घटनाओं को भी साथ लेकर आगे बढ़ते रहे। स्वयं रंगमंच से जुड़े रहे इसलिए वे नाट्य आयोजक की कठिनाइयों से परिचित रहे। सभी बिन्दुओं पर चिन्तन-मनन कर मंचीय नाट्य लेखन करते रहे। उनके नाटकों की लोकप्रियता शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में समान रूप से बनी रही है। बिहार में नाटक को पूर्णत: मनोरंजन कर से मुक्त कराया।

नाटक को रोजी-रोटी से जोड़ने के लिए डॉ. चुतुर्भुज ने ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय में एम.ए. स्तर पर 'नाट्यशास्त्र' की पढ़ाई प्रारंभ की। इसी विश्वविद्यालय का प्रभाव रहा कि बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा में भी 'नाट्यशास्त्र' की पढ़ाई शुरू हुई। इन्टरमीडिएट काउन्सिल में भी इस विषय को स्वीकृत किया गया। लेकिन सिवाय कुछ परीक्षोतीर्ण छात्र के किसी विश्वविद्यालय अथवा कॉलेजों में किसी रंगकर्मी को नौकरी नहीं मिल पाई। सरकार को ध्यान देने की जरूरत है कि जिस तरह स्कूल कॉलेजों में ड्राईंग टीचर, डांस टीचर के लिए पद निर्धारित की गई है, उसी तरह नाट्य शिक्षक की नियुक्ति स्कूल-कॉजेजों में भी की जाय। नाट्य शिक्षक के पद निर्धारित किए जाय। पंचम वेद की प्रतिष्ठा प्राप्त नाट्य विधा में सभी कलाएं सन्निहित हैं। नाटक में शिल्पकला, मेक अप, संगीत, नृत्य, लेखन, अभिनय, लाइटिंग, वस्त्र निर्माण, प्रचार-प्रसार, आदि क्षेत्र में प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

मगध कलाकार और कला जागरण के सदस्य बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने पिछले दस वर्षों से लगातार अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन ऐतिहासिक नाटककार डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में करते रहे हैं। नाट्य महोत्सव का आयोजन पूरे भारतवर्ष में होता है लेकिन ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का श्रेय एकमात्र इस ऐतिहासिक भूमि पाटलिपुत्र अर्थात् पटना को ही मिला है। रंगमंच के विविध आयामों से जुड़ी अनेक प्रतिभाएँ बिहार में छिपी हैं। सरकार का ध्यान अगर नाट्य विधा को परिष्कृत करने की ओर हो तब काफी हद तक बेरोजगार रंगकर्मियों को रोजगार मिलना संभव हो सकेगा।

अध्यक्ष, मगध कलाकार, पटना

प्रकाशक
कला-जागरण : **गणेश प्रसाद सिन्हा**, अध्यक्ष
C/11, कंकड़बाग कॉलोनी, पटना-20
(मो. 09431622131)
: **सुमन कुमार, सचिव**
सुन्दरी भवन, देवी स्थान, बंगाली टोला,
पूर्वी मीठापुर फार्म, पटना-1 (मो. 9431066931)

साज-सज्जा : **अभिषेक कुमार**
एवं कवर डिजाइन

मुद्रक : **ए.के.इन्टरप्राइजेज**
विजय अमन अपार्टमेन्ट, तिवारी बेचर
कंकड़बाग, पटना- 800 020
9334858565/8271253221
akenterprises179@gmail.com

मगध कलाकार : **कृष्णानंद**, अध्यक्ष
वरिष्ठ पत्रकार और उपन्यासकार
1, दक्षिण आनंदपुरी,
पश्चिमी बोरिंग कैनाल रोड
पटना- 800 001
(मो. 9431020390)
: **डॉ. अशोक प्रियदर्शी, सचिव**
क्वार्टर नं.-106, रोड नं.-6,
श्रीकृष्ण नगर, पटना-800 001
(मो. 09334525657/9709810010)

Scanned by CamScanner

लाल जी टंडन
LAL JI TANDON

सत्यमेव जयते

राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

राज भवन
पटना - 800022
RAJ BHAVAN
PATNA-800022

18 फरवरी, 2019

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटककार डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में 'दसवें अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव' का आयोजन 'मगध कलाकार' नामक सांस्कृतिक संस्था के तत्वावधान में आगामी 4 से 6 मार्च, 2019 तक पटना में होने जा रहा है।

आज भी नाट्य-समारोहों का आनंद लेने में आम जनता की अभिरूचि बनी हुई है। ऐतिहासिक नाटकों के मंचन से नई पीढ़ी को भारतीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासतों और विचारों से अनुप्राणित होने का सुअवसर उपलब्ध हो जाता है।

मैं 'नाट्य महोत्सव' के आयोजन तथा इस अवसर पर 'स्मारिका' के सफल प्रकाशन के प्रति अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

(लाल जी टंडन)

Phone : 0612-2786100-107, Fax : 0612-2786178
e-mail : governorbihar@nic.in

Scanned by CamScanner

कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा
मंत्री
शिक्षा एवं विधि विभाग
बिहार सरकार, पटना

बिहार सरकार

Krishnandan Prasad Verma
Minister
Education & Law Department
Government of Bihar, Patna

पत्रांक : M - 68

दिनांक : 15.02.2019

शुभकामना संदेश

यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि हिन्दी नाट्य क्षेत्र में बिहार के गौरव रहे डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन दिनांक 04 से 06 मार्च तक पटना में किया जा रहा है। मगध कलाकार और कला जागरण के संयुक्त प्रयास से पिछले नौ वर्षों से ऐसे आयोजनों का निरंतर जारी रखना प्रशंसनीय माना जाएगा। अतीत की ऐतिहासिक और पौराणिक घटनाओं को मंच के माध्यम से जन-समूह के बीच प्रेषित करने का, जो संकल्प ऐतिहासिक नाटककार डॉ. चतुर्भुज ने लिया था उसे साकार रूप प्रदान करने में इन द्वय संस्थाओं के प्रयास सराहनीय है। मौके पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका और आयोजन की सफलता के लिए मेंरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा)

आवास : 3, स्टैण्ड रोड, पटना-800015 / कार्यालय : विकास भवन, नया सचिवालय, बिहार, पटना ।
दूरभाष : 0612-2201904 (का.) फैक्स : 0612-2215836
Res. : 3, Stand Road, Patna - 800015 / Office : Vikas Bhawan, New Secretariat, Bihar, Patna
Phone : 0612-2204904 (O), Fax : 0612-2215836
E-mail : ministereducation0099@gmail.com, Mob.: 9931271328, 8544412147

Scanned by CamScanner

संक्षिप्त परिचय

नाटककार डॉ. चतुर्भुज

नाम : डॉ चतुर्भुज
जन्म तिथि : 15/01/1928 ई. महाप्रयाण : 11/08/2009 ई.
जन्म स्थान : मुहल्ला- महलपर, बिहार शरीफ, जिला-नालन्दा
शिक्षा : (क) एम.ए. (पालि और बौद्ध साहित्य में)
(ख) पी-एच.डी., (शोध विषय- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक- एक अध्ययन')
पिता : स्व. मुंशी प्रयाग नारायण
वेबसाइट : www.chaturbhujdrama.com

मगध कलाकार का पता : रोड नम्बर-06, क्वाटर नम्बर-106, श्री कृष्ण नगर, पटना-800001 (बिहार) फोन : 9334525657

उपलब्धियाँ

1. डॉ. चतुर्भुज का जन्म बिहार में हुआ। इन्होंने अपने जीवन के इक्यासी बसंत देखे। सारा जीवन उन्होंने हिन्दी के माध्यम से नाट्य-लेखन, प्रस्तुतिकरण, निर्देशन, मंचन, अभिनय कला के प्रचार-प्रसार में लगा दिया और नाट्यकला के विकास में प्रयत्नशील रहे। नाटक के अलावा अन्य साहित्य विधाओं में भी इन्होंने रचना की है।
2. विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों में इनके कार्यों और उपलब्धियों का उल्लेख आया है। जैसे:- साहित्य अकादमी के 'हूज हू' में, डॉ. दशरथ ओझा के 'हिन्दी नाटक कोश' में, डिस्टिंगयूइस्ड यूथ ऑफ इन्डिया 'हूज हू' (पृष्ठ-146) में, 'बायोग्राफी इन्टरनेशनल' में, 'एशिया पेसेफिक हूज हू' में, 'एशियन अमेरिकन हूज हू' में, लर्नेड एशिया' में, तथा अनेक संदर्भ ग्रन्थों में इनके नाम का और इनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। 'रेफरेन्स एशिया' में इनके बारे में विस्तार से उल्लेख है जिसमें एशिया के चुने हुए लगभग 1500 व्यक्ति ही सम्मिलित किये गये हैं। इनके अलावा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली से प्रकाशित और डॉ. प्रतिभा अग्रवाल द्वारा सम्पादित 'रंगकोश' के दोनों खंडों में डॉ. चतुर्भुज का उल्लेख किया गया है। नौवीं कक्षा के लिए बिहार टेक्स्ट बुक कमिटि द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'वर्णिका' के 'बिहार की नाट्यकला' अध्याय में डॉ. चतुर्भुज का नाटक में योगदान पर प्रकाश डाला गया है।
3. नाटक और थियेटर के प्रति डॉ. चतुर्भुज के योगदान पर अनेक विद्वानों ने एम.फिल. और पी-एच.डी. (कर्नाटक विश्वविद्यालय/ ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा/मगध विश्वविद्यालय आदि) के लिए शोध कार्य किया। कर्नाटक में एक विद्वान को डॉ. चतुर्भुज के पौराणिक नाटकों पर शोध करने में पी-एच.डी. की डिग्री से सम्मानित किया जा चुका है।

रंगमंच :-

4. डॉ. चतुर्भुज की मान्यता थी कि नाटक सिर्फ एक विधा ही नहीं है बल्कि इसमें साहित्य, कला, विज्ञान सभी कुछ है। अर्थात् अभिव्यक्ति का यह सबसे सशक्त और समन्वित माध्यम है। जब नाटक लिखा जाता है तब यह साहित्य है, तैयारी के समय इसमें विभिन्न कलायें जुड़ती हैं और मंचन के दौरान प्रकाश, ध्वनि, मेकअप, सेट निर्माण आदि विज्ञान विषयक बातें आती हैं। डॉ. चतुर्भुज ने अपने पूरे जीवन में इन विषयों का मनन किया है और इसे व्यवहार में भी वे लाते रहे।
5. नाटक को पंचम वेद की संज्ञा देने के बाद भी हिन्दी की उपेक्षित विधा नाटक और रंगमंच है। डॉ. चतुर्भुज ने साहित्य और कला के रूप में इसे समृद्ध किया। इसे रोजी-रोटी से जोड़ कर बेरोजगारों को एक नई दिशा दी। इसी उद्देश्य से संघर्ष करते हुए उन्होंने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्यशास्त्र एक स्वतन्त्र विषय के रूप में प्रारम्भ कराया। सरकारी सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे वहां प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में ढाई साल तक सेवारत रहे। आगे चल कर इन्होंने इन्टरमीडिएट स्तर पर नाटक को एक स्वतन्त्र विषय के रूप में स्वीकृति प्रदान कराई।

Scanned by CamScanner

6. डॉ. चतुर्भुज का प्रयास स्मरणीय माना जायेगा कि उन्होंने बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर जी से मिल कर बिहार में नाट्य प्रदर्शन पर लग रहे मनोरंजन कर को समाप्त कराया और बिहार में नाट्य प्रदर्शन, मनोरंजन-कर से मुक्त हुआ। इससे हिन्दी रंगकर्मियों को काफी लाभ हुआ है।
7. सन् 1952 ई. में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दी और रंगमंच के प्रचार-प्रसार के लिए मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की और प्रमुख रूप से ग्रामीण अंचलों में हिन्दी में नाट्य प्रदर्शन किये। आज के लोग ग्रामीण अंचलों में जाना नहीं चाहते। डॉ. चतुर्भुज इसके अपवाद थे। इनके नाम से ग्रामीण अंचलों के सभी बड़े-छोटे रंगकर्मी परिचित हैं।
8. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे रंगकर्मी रहे जिन्होंने पारसी युग के नाटकों में अभिनय, निर्देशन करते हुए हिन्दी युग के नाटकों को एक नई दिशा देने का सफल प्रयास किया। उन्होंने हिन्दी नाट्य लेखन में एक नई शैली दी। इतिहास में छिपे चरित्रों और घटनाओं को नाटक के माध्यम से युवा वर्ग को परिचित कराने का सफल प्रयास किया। उन्होंने पारसी युग से बढ़ते हुए आज के नुक्कड़ नाटकों और टैरिस (Terrace) थिएटर तक का एक लम्बा सफर तय किया था।
9. डॉ. चतुर्भुज ने लगभग 300 से अधिक हिन्दी नाट्य प्रदर्शनों में लेखक, निर्देशक, अभिनेता के रूप में भाग लिया। इन प्रदर्शनों से हिन्दी का बड़ा प्रचार-प्रसार हुआ।
10. फिल्म और रंगमंच के चर्चित कलाकार पृथ्वीराज कपूर उनके नाटक 'कलिंग-विजय' को देखने के लिए स्वयं अपने रंगकर्मियों के साथ बख्तियारपुर (पटना जिला) आये थे। उन्होंने डॉ. चतुर्भुज की लगनशीलता देख उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। बम्बई लौटने के बाद भी डॉ. चतुर्भुज के साथ श्री कपूर का सम्बन्ध बना रहा।
11. नव नालन्दा महाविहार के प्रांगण में आयोजित कॉन्वोकेशन (1977) और द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन (1980) में डॉ. चतुर्भुज ने अपनी संस्था के कलाकारों द्वारा बौद्ध ग्रंथ 'दिव्यावदान' के कुणालावदान की कथा पर आधारित ऐतिहासिक नाटक 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' का मंचन कराया। उस अवसर पर कई देश के बौद्ध विद्वानों के साथ आस्ट्रेलिया के इतिहासकार डॉ. ए. एल. बाशम और बौद्ध विद्वान भदन्त आनन्द कौसल्यायन भी उपस्थित थे। नाटक देखकर उन विद्वानों के साथ अन्य दर्शक भावुक थे।
12. अपनी सांस्कृतिक संस्था 'मगध कलाकार' के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज ने न सिर्फ हिन्दी रंगमंच को गौरवान्वित किया था बल्कि नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से अर्जित राशि एकत्रित कर अनेक सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं और सरकार को प्रदान कर गौरव प्राप्त किया था। वे कुछ प्रमुख सरकारी एवं गैरसरकारी सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाएं हैं- एस.यू. कॉलेज, हिलसा/ जमुई में स्थापित स्टेडियम/ रांची समाज कल्याण समिति/ मुख्यमंत्री बाढ़ राहत कोष/ महिला महाविद्यालय, खगौल/ प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष/ राष्ट्रीय सुरक्षा कोष आदि।
13. अपनी संस्था के कलाकारों और बौद्ध भिक्षुओं का दल लेकर डॉ. चतुर्भुज ने बिहार का प्रतिनिधित्व करते हुए राजधानी दिल्ली के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर 1957 ई. में प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की झांकी प्रस्तुत की और पुरस्कृत हुए। पटना के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर झाँकियों का प्रदर्शन इनके प्रयास से ही सन् 1979 ई. से आरम्भ किया गया जो आज तक गतिशील है।
14. सरकारी सेवा से निवृत्त होने के दस वर्षों के बाद डॉ. चतुर्भुज ने मगध विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की थी। इनके शोध का विषय था- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक-एक अध्ययन'।
15. हिन्दी को रंगमंचीय दृष्टि से समृद्ध करने के लिए उन्होंने दो प्राचीन श्रेष्ठ संस्कृत नाटकों का हिन्दी रंगमंचीय रूपान्तर करके सफलतापूर्वक उन्हें मंचित किया। ये नाटक हैं- 'शकुन्तला' और 'मुद्राराक्षस'।
16. उत्तर-दक्षिण की सांस्कृतिक एकता पर आधारित इनका साहित्यिक हिन्दी मौलिक नाटक 'रावण' पटना के कालिदास रंगालय के मंच पर लगातार तीन माह तक छुट्टियों के दिन मंचित होता रहा। उसे काफी प्रशंसा मिली। यह नाटक मील का पत्थर साबित हुआ। इस नाटक से प्रभावित होकर बिहार आर्ट थिएटर के संस्थापक निदेशक अनिल कुमार मुखर्जी ने इसका बंगला अनुवाद किया।

Scanned by CamScanner

कालान्तर में रावण नाटक का मैथिली अनुवाद युवा पत्रकार लक्ष्मी कान्त सजल ने किया। अंग्रेजी अनुवाद का श्रेय बिहार सरकार के पदाधिकारी कुमार शांत रक्षित को जाता है। भाषा संगम, इलाहाबाद के महासचिव डॉ. एम. गोविन्द राजन ने इस नाटक का तमिल भाषा में अनुवाद किया जिसका प्रकाशन चेन्नई से किया गया। बंगला भाषा और अंग्रेजी भाषा में अनूदित रावण नाटक के प्रकाशन की प्रतीक्षा पाठकों में बनी है।

17. डॉ. चतुर्भुज के अन्य कई ऐतिहासिक नाटकों का मैथिली और अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है जिनका प्रकाशन अभी नहीं हो पाया है।

नाट्य-लेखन :-

18. हिन्दी में रंगमंचीय नाटकों का अभाव देख डॉ. चतुर्भुज ने नाट्य-लेखन की ओर अपना कदम बढ़ाया। उनका पहला नाटक था- मेघनाद। नाट्य प्रदर्शन की सफलता के बाद अन्य रंगकर्मियों की मांग पर उन्होंने इसका प्रकाशन किया। फिर तो नाट्य-लेखन, प्रदर्शन के बाद प्रकाशन की ओर उन्हें कदम बढ़ाना अनिवार्य हो गया। प्रत्येक वर्ष हर रंग संस्था की मांग होती दशहरे के मौके पर डॉ. चतुर्भुज लिखित कोई नवीनतम नाटक ।
19. डॉ. चतुर्भुज का लेखन भारत विभाजन से पूर्व ही प्रारम्भ हो चुका था। उनकी कहानियाँ, लेख, संस्मरण आदि का प्रकाशन उन पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे थे जो पत्रिकाएं आज या तो बन्द हो गयी हैं अथवा भारत विभाजन के बाद इन दिनों वे पत्रिकाएं पाकिस्तान क्षेत्र में चली गई हैं। उस समय की चर्चित पत्र-पत्रिकाएं रही हैं- विश्वमित्र (कलकत्ता), लक्ष्मी (लाहौर), ज्योत्स्ना, हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नवनीत, सत्यकथा आदि।
20. डॉ. चतुर्भुज के प्रकाशित रंगमंचीय नाटकों की संख्या चालीस से अधिक हैं। रेडियो-टेलिविजन के लिए भी इन्होंने सैकड़ों नाटक और रूपक लिखे। 'बाबू विरंचीलाल' नामक टेलीफिल्म का निर्माण भी किया।
21 उत्तर-प्रदेश की सरकार ने डॉ. चतुर्भुज को उनकी एक नाट्य पुस्तक (मीरकासिम) पर पुरस्कृत किया है। केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, राजस्थान सरकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय (संस्कृत), बिहार राजभाषा विभाग आदि ने इनके हिन्दी नाटकों के प्रकाशन के लिए समय-समय पर आर्थिक अनुदान दिये हैं।
22. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे नाटककार रहे जिन्होंने विदेशी चरित्रों को अपने नाटकों में स्थान दिया। वे चरित्र ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय रहे। उनके नाटकों में अंग्रेज, फ्रेंच, इटैलियन, ग्रीक, चीनी आदि चरित्र रहे हैं। चरित्रों को सजीव बनाने के लिए उन्हें संबन्धित देश के दूतावासों से बराबर सम्बन्ध बनाये रखना पड़ा था।
23. डॉ. चतुर्भुज के चुने हुए पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक रंगमंचीय नाटकों का संग्रह तीन खंडों में 'चतुर्भुज रचनावली' दिल्ली से समय प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इनकी कुल पृष्ठ संख्या लगभग 1500 है।
24. समय प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास' डॉ. चतुर्भुज की उल्लेखनीय पुस्तक कही जायेगी जिसमें उन्होंने प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटकों के अलावा यूनानी, अंग्रेजी, फ्रेंच, अमेरिकन, रूसी, जर्मन, इटैलियन, चीनी, जापानी, भाषाओं के नाटकों का इतिहास भी है। हिन्दी में इस प्रकार का यह पहला ग्रन्थ है जिसमें इतनी भाषाओं के नाटकों का इतिहास एक स्थल पर उपलब्ध है। इसके लेखन में विदेशी दूतावासों ने भी सामग्री और चित्र दिये हैं।
25. अपने जीवन के अन्तिम समय में डॉ. चतुर्भुज रंगकर्म के व्यवहारिक पक्ष को ध्यान में रखकर एक पुस्तक लिख रहे थे- 'नाट्य-शिल्प-विज्ञान'। सात अध्याय का लेखन हो चुका था लेकिन असामयिक उनकी मृत्यु हो गई। पुस्तक अधूरी है। लेकिन उसके प्रकाशन की योजना बन रही है ताकि रंगकर्मी उस पुस्तक से लाभान्वित हो सकें।
26. इतिहास डॉ. चतुर्भुज का प्रिय विषय रहा था। यही मूल कारण है कि उन्होंने इतिहास विषयक चरित्रों को नाटक के माध्यम से सजीव किया। नाट्य लेखन के साथ ही उन्होंने तीन ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। **'समुद्र का पक्षी'** ऐतिहासिक उपन्यास इटैलियन यायावर मनूची के जीवन चरित्र पर आधारित है जिसने शिवाजी और औरंगजेब के युद्ध को अपनी आंखों से देखा था और उसने स्वयं उसमें भाग भी लिया था। दूसरा उपन्यास **राजदर्शन** है। यह उपन्यास मुंगेर के नवाब मीरकासिम के चरित्र पर आधारित

Scanned by CamScanner

है जिसने अल्पकाल के शासनकाल में ही इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया था। तीसरा उपन्यास है भगवान बुद्ध के गृह-त्याग से लेकर उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित- **'तथागत'**। इन उपन्यासों में तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक घटनाओं का सजीव चित्रण है।

27. जहाँ एक ओर 1857 के वीर सेनानी पीरअली, कुंवरसिंह, झांसी की रानी, बहादुरशाह जैसे नाटकों में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दु-मुस्लिम एकता और सर्वधर्म समन्वय को दर्शाने का सफल प्रयास किया है, वहीं अरावली का शेर, भीष्म-प्रतिज्ञा, शिवाजी, सिकन्दर-पोरस, टीपू सुल्तान में भारतीय इतिहास और संस्कृति को गौरवान्वित किया है। दूसरी ओर उनके नाटक कलिंग-विजय, पाटलिपुत्र का राजकुमार, प्रतिशोध, आदि में बौद्ध धर्म की घटनाएं सजीव रूप से चित्रित हुई हैं।

28. डॉ. चतुर्भुज लिखित उनकी आत्मकथा **'मेरी रंगयात्रा'** शीर्षक से समय प्रकाशन, नई दिल्ली से उनके मरणोपरान्त प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन के अनछुए पहलुओं का उल्लेख करते हुए बताया है कि नाटक और रंगमंच उनके जीवन की प्रतिछाया बना रहा।

बौद्ध साहित्य और दर्शन :-

28. आर्थिक अभाव के कारण डॉ. चतुर्भुज ने कभी कॉलेज का मुंह नहीं देखा। लेकिन पढ़ने की ललक उनमें लगातार बनी रही। परिवार के जीवन-यापन हेतु उन्होंने छोटी-छोटी कई नौकरियां की और फिर बख्तियारपुर-राजगीर तक चलने वाली मार्टिन कम्पनी की छोटी लाइन रेलवे की नौकरी स्वीकार की। प्राईवेट से ही उन्होंने आई.ए. और बी.ए. की परीक्षाएं पास की। बख्तियारपुर-राजगीर रेलवे में ड्यूटी करते हुए उनकी भेंट अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त बौद्ध विद्वान भिक्षु जगदीश कश्यप जी से हुई। वे उस समय भारत सरकार से अनुदान प्राप्त कर, बौद्ध त्रिपिटक के देवनागरीकरण करने और उनके सम्पादन के कार्य में लगे थे। डॉ. चतुर्भुज ने उनके मार्ग-दर्शन में बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने एम.ए. की परीक्षा पास की। बौद्ध साहित्य और दर्शन का उन्हें ज्ञान मिला। फिर रेलवे की नौकरी छोड़ डॉ. चतुर्भुज जुड़ गये नव नालन्दा महाविहार से। देश-विदेश के नामी बौद्ध विद्वानों के साथ रहकर त्रिपिटक-सम्पादन-विभाग में चार साल तक पालि ग्रन्थों का देवनागरी में सम्पादन कार्य किया। यह हिन्दी और देवनागरी की विशिष्ट सेवा है। बौद्ध विषयक उनके अनेक नाटक और लेख प्रकाशित और प्रसारित हुए।

आकाशवाणी सेवा :-

29. संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज का चयन आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिशासी (Programme Executive) के पद पर सन् 1959 में हुआ।

30. आकाशवाणी की सेवा करते हुए उन्होंने पटना, राँची, भागलपुर और दरभंगा क्षेत्रों में रहकर हिन्दी साहित्य और रंगमंच की सेवा की। आकाशवाणी के लिए उन्होंने अनेक रेडियो नाटक, रेडियो फीचर और बौद्ध साहित्य पर आधारित अनेक वार्त्ताएं लिखीं। कई रेडियो नाटकों और फीचरों का प्रसारण अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न भाषाओं में विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित हुए। सन् 1986 ई. में आकाशवाणी, दरभंगा से केन्द्र निदेशक के पद को सुशोभित करते हुए वे सेवा निवृत्त हुए। उनके प्रमुख रेडियो नाटक और फीचर रहे हैं- गणतन्त्र की भूमि वैशाली, पलासी का धूमकेतू, नेत्रदान, लाल कुंवरी, सफेद हाथी, अवन्ती की राजकुमारी, तलवारों के साये में, नव नालन्दा महाविहार, कलम के जादूगर रामबृक्ष बेनीपुरी, मिलिन्द-प्रश्न, पाटलिपुत्र का राजकुमार, बैकठपुर का शिवमंदिर, पाटलिपुत्र से पटना तक, बाजीराव-मस्तानी, झेलम के किनारे, जहाँआरा, हैदरअली, रेडियो नाट्य शृंखला के अन्तर्गत जातक कथा पर आधारित तेरह धारावाहिक नाटक आदि।

पुरस्कार/सम्मान :-

31. 1998 ई. में अनिल कुमार मुखर्जी शिखर सम्मान, सन् 2000 में दिल्ली में आयोजित शताब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी सेवा के लिए डॉ. चतुर्भुज को शताब्दी सम्मान से सम्मानित किया गया, सन् 2004 ई. में राष्ट्र गौरव-राष्ट्रकवि दिनकर सम्मान से सम्मानित, श्री चित्रगुप्त आदि मंदिर प्रबन्धक समिति द्वारा हिन्दी नाटक में विशिष्ट योगदान हेतु सन् 2004 ई. में सम्मान, बिहार

Scanned by CamScanner

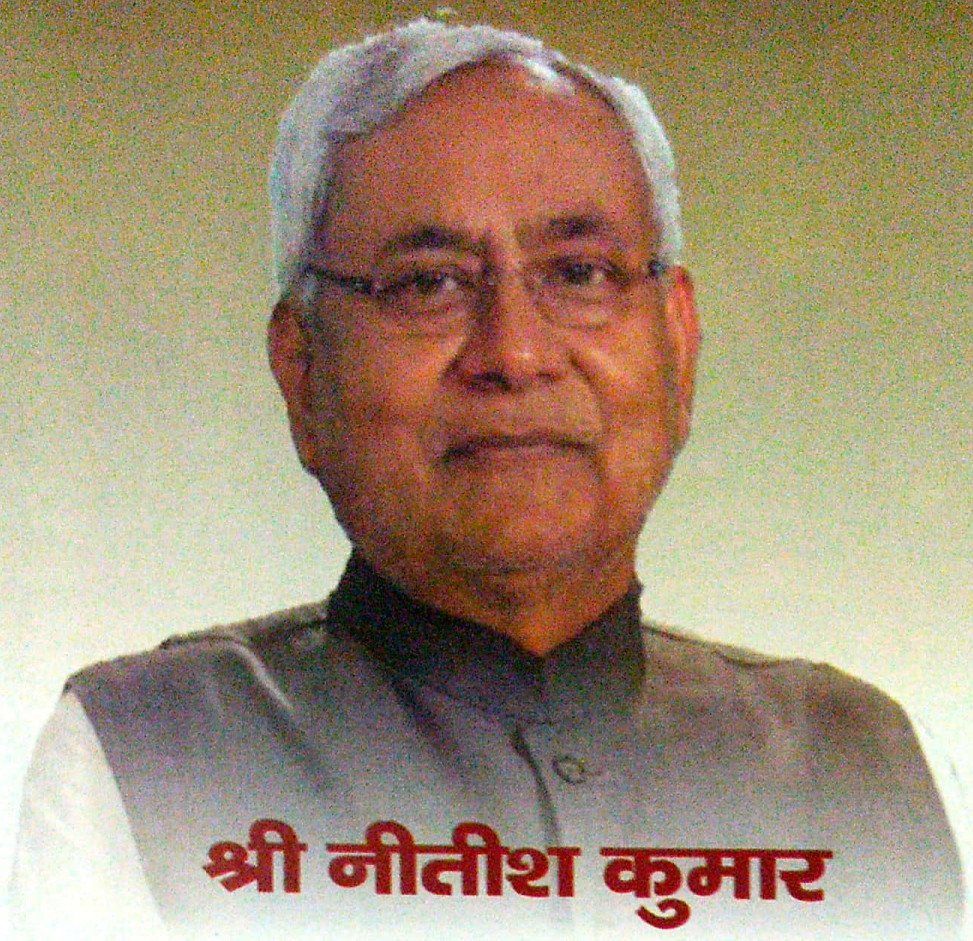

श्री नीतीश कुमार

श्री नीतीश कुमार,
माननीय मुख्यमंत्री, बिहार
द्वारा बुनकरों के हितों में
कैबिनेट द्वारा लिए गए
ऐतिहासिक फैसले को
बिहार राज्य हस्तकरघा
बुनकर सहयोग संघ लि.
के अध्यक्ष एवं राज्य के
तमाम बुनकरों की ओर से
कोटि-कोटि धन्यवाद ।

निवेदक

मो. नकीब अंसारी

अध्यक्ष

बिहार स्टेट हैण्डलूम वीमर्स को-ऑपरेटिव यूनियन (बिस्कोटेक्स)

राजेन्द्र नगर, पटना

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

राष्ट्रभाषा परिषद् ने उन्हें वयोवृद्ध साहित्यकार के रूप में सन् 2004 ई. में सम्मानित किया। 'मीरकासिम' नाट्य-लेखन पर उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, साहित्कार-सम्मान- समिति द्वारा उन्हें नाटक एवं रंगमंच के लिए सम्मान, इसी तरह और भी अनेक संस्थाओं ने उनके नाट्य-लेखन, रंगमंच के प्रति समर्पित, हिन्दी सेवा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हेतु सम्मानित किया है।

पत्रकारिता :-

32. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे प्रतिभाशाली लेखक-रंगकर्मी और प्रशासक रहे जिन्होंने अपने अनुभवों से, आगे की पीढ़ियों को लाभान्वित किया। सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में सेवा की। पटना आकर एक ओर वे यूनेस्को से मान्यता प्राप्त 'नाट्य-प्रशिक्षणालय', पटना में रंगकर्मियों को पारसी थियेटर की शिक्षा देते रहे, वहीं दूसरी ओर डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा पत्रकारिता और जन-संचार, डॉ. जाकिर हुसैन पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को भी रेडियो-पत्रकारिता और दूरदर्शन-पत्रकारिता की शिक्षा देते रहे। अपने जीवन-काल में डॉ. चतुर्भुज जहां भी रहे, रंगकर्मियों, पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को शिक्षित ही करते रहे। उनके आवास पर भी लोगों का आगमन लगातार जारी रहा। सम्भवत: उनकी सहृदयता और उनके ज्ञान का सागर देखकर ही लोग उन्हें गुरुजी कहकर संबोधित करते रहे और रंगकर्मियों के बीच वे नाटक के भीष्म-पितामह कहे जाते रहे।
33. तत्कालीन लोकप्रिय पत्र-पत्रिका विश्वमित्र, ब्लिज, प्रदीप, आर्यावर्त्त, इंडियन नेशन के नालंदा के स्थानीय संवाददाता।

चतुर्भुज-साहित्य

रंगमंचीय नाटक :-

पाटलिपुत्र का राजकुमार, कलिंग-विजय, सिकन्दर-पोरस, कालसर्पिणी, टीपू सुल्तान, रावण, मेघनाद, कंसवध, श्रीकृष्ण, कर्ण, भीष्म-प्रतिज्ञा, बन्द कमरे की आत्मा, नदी का पानी, भगवान बुद्ध, बाबू विरंचीलाल, मुद्राराक्षस, अरावली का शेर, नूरजहां, शिवाजी, सिराजुद्दौला, मीरकासिम, कृष्ण कुमारी, पीरअली, झांसी की रानी, कुंवर सिंह, मोर्चे-पर, बहादुरशाह, शाही अमानत, विजय के क्षण, बादल का बेटा, महिषासुर वध, कारागार, चतुर्भुज रचनावली (तीन खंडों में)।

उपन्यास/कथा संग्रह:-

समुद्र का पक्षी- (मनूची के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास), **राजदर्शन**- (मुंगेर का नवाब मीरकासिम के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास), **तथागत**- (भगवान बुद्ध के गृह-त्याग से उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित) **इतिहास बोल उठा**- (खोजपूर्ण ऐतिहासिक लेख संग्रह), **कमरे की छाया**- (उल्लेखनीय कहानी-संग्रह) **मेरी रंगयात्रा (आत्मकथा)**- डॉ॰ चतुर्भुज के संघर्षमय जीवन की कथा।

इतिहास :- औरंगज़ेब, भारत के बौद्ध विहार, प्रमुख भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास।

अंग्रेजी/ मैथिली/तमिल ग्रन्थ :- Memoirs of William Tayler (Commissioner of Patna in 1857), History of the Great Mughals, The Rani of Jhansi (Drama), The Great Historical Dramas, रावण (मैथिली और तमिल अनुवाद नाटक)।

अप्रकाशित - नाट्य शिल्प विज्ञान (हिन्दी), Raavan, Shri Krishn, Kans-Vadh, Pataliputra Ka Rajkumar, Peer Ali (Translated in English)

डॉ. चतुर्भुज लिखित उपर्युक्त सभी पुस्तकें, पाठकों/रंगकर्मियों/शोधार्थियों के लिए वेबसाईट www.chaturbhujdrama.com पर उपलब्ध है।

Scanned by CamScanner

मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) की ओर से डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में दिये जाने वाले सम्मान

मगध कलाकार और बिहार आर्ट थियेटर के सौजन्य से डॉ चतुर्भुज शिखर सम्मान:-

सन् 2010 : डॉ. जितेन्द्र सहाय- शल्य चिकित्सक और नाटककार
बेस्ट एक्टर : श्री अखिलेश्वर प्र. सिन्हा, **बेस्ट एक्ट्रेस** : श्रीमती सुचित्रा सिन्हा।

सन् 2011 : श्री गोपाल शरण- रंगमंच, रेडियो और फिल्म के कलाकार
बेस्ट एक्टर : श्री नन्दलाल सिंह **बेस्ट एक्ट्रेस** : सुश्री उज्ज्वला गांगुली, **श्रेष्ठ निर्देशक** : उपेन्द्र कुमार

सन् 2012 : श्री कृष्णानन्द- ऐतिहासिक उपन्यासकार, वरिष्ठ पत्रकार और नाट्य समीक्षक
बेस्ट एक्टर : श्री अमित श्रीवास्तव, **बेस्ट एक्ट्रेस**: श्रीमती अनीता कुमारी वर्मा

सन् 2013 : श्री गणेश सिन्हा-नाट्य निर्देशक, अभिनेता, और रंग-परामर्शी।
बेस्ट एक्टर : श्री राजवर्द्धन, **बेस्ट एक्ट्रेस** : सुश्री सविता श्रीवास्तव

सन् 2014 : श्री बच्चन लाल- अभिनेता, मेकअप मैन,

सन् 2015 : श्री रामदास राही- स्व. भिखारी ठाकुर के परिजन जिन्होंने उनकी अनमोल रचनाओं को संरक्षित रखा।
बेस्ट ऐक्टर-कुणाल कौशल, **बेस्ट ऐक्ट्रेस**- पूजा कुमारी

सन् 2016 : श्री अनिल पतंग- संपादक, नाटककार, कला साधक

सन् 2017 : प्रो. (डॉ.) समी खाँ, वरिष्ठ रंगकर्मी और रग चिंतक

सन् 2018 : श्री सतीश प्रसाद सिन्हा, व्यंग्य नाटककार

मगध कलाकार की ओर से दो वर्षों के लिए डॉ. चतुर्भुज छात्रवृत्ति सम्मान:-

सन् 2010 : श्री अमित गुप्ता, श्रीमती रंजीता जयसवाल

सन् 2011 : श्री सुनील कुमार सिंह, सुश्री साक्षी प्रिया

सन् 2012 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, श्री राहुल कुमार

सन् 2013 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, मो. आसिफ इकबाल

सन् 2014 : सुश्री मारिया प्रवीण, विशाल कुमार तिवारी

सन् 2015 : सुश्री कनीज फातिमा, श्री उदित कुमार

सन् 2016 : सुश्री कमल प्रिय, श्री श्याम बिहारी ठाकुर

सन! 2017 : श्री नीतीश प्रियदर्शी, सुश्री अदिति

सन! 2018 : श्री अभिषेक राज, सुश्री प्रियंशी

मगध कलाकार और कला-जागरण की ओर से डॉ. चतुर्भुज नाटक-पत्रकारिता सम्मान

सन् 2012 : **श्री आशीष कुमार मिश्र**- रंगकर्मी और पत्रकार, दैनिक हिन्दुस्तान, पटना।

सन् 2013 : **श्री दीनानाथ साहनी**- लेखक, पत्रकार और रंग समीक्षक, दैनिक जागरण, पटना।

सन् 2014 : **श्री ध्रुव कुमार**- रंगकर्मी, लेखक, स्वतन्त्र पत्रकार।

सन् 2015 : **श्री साक़िब इक़बाल खाँ**- रंग-पत्रकार, दैनिक भास्कर, पटना।

सन् 2016 : **श्री रविराज पटेल**- संस्थापक-सचिव, सिनेयात्रा/लेखक, पत्रकार, व्याख्याता, एस.ए.ई. कॉलेज, जमुई।

सन् 2017 : **डॉ. लक्ष्मी कान्त सजल**, लेखक (हिन्दी, मैथिली), पत्रकार, अनुवादक, दैनिक आज, पटना।

सन् 2018 : **श्री सुमित कुमार**, मुख्य संवाददाता, प्रभात खबर, पटना

सन् 2019 : **श्री किशोर केशव**, समाचार संपादक, राष्ट्रीय सहारा, पटना

Scanned by CamScanner

आयोजन समिति

सुमन कुमार
सचिव
कला-जागरण, पटना
09431066931

वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार का नाम रंग-क्षेत्र में कोई नया नहीं है। इन्होंने स्वीकार किया है कि रंगमंच ही मेरे जीने का मकसद है। आकाशवाणी, पटना के वरीय उद्घोषक रहे श्री कुमार, सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद अभिनय, निर्देशक, संयोजक, कोरियोग्राफर आदि विद्या में और भी सक्रिय हो गये। अपनी अभिनय क्षमता के बल पर इन्होंने रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गाँधी', प्रकाश झा की फिल्म दामूल, भोजपुरी फिल्म हमार देवदास, लागल नथुनिया के धक्का, लखैरा, श्याम बेनेगल के धारावाहिक -डिस्कवरी ऑफ इन्डिया से जुड़े। कला-संगम, बिहार आर्ट थियेटर के बाद सन् 1990 में कला-जागरण की स्थापना कर कला के क्षेत्र में इनकी तीव्रता और भी बढ़ गयी। सैकड़ों नाटक में अभिनय के बाद वे वर्तमान युवा पीढ़ी की नाट्य कला को निखारने में लग गये हैं। श्री कुमार बिहार आर्ट थियेटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक भी हैं। इनके निर्देशन में तैयार महत्वपूर्ण नाटक हैं-सजा, डायन, फंसरी, आउ झोपड़ी सुलग गेल, अंधा युग, कारागार, सिकन्दर-पोरस, बन्द कमरे की आत्मा, बाबू जी का पासबुक, कालसर्पिणी, गोपा, पीरअली, आदि। अपने देश की विरासत ऐतिहासिक घटनाओं को आज की युवा पीढ़ी तक सजीव बनाये रखने के उद्देश्य से डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में ऐतिहासिक नाट्योत्सव सन् 2010 से प्रारम्भ करने का एक क्रांतिकारी कदम सुमन कुमार का रहा है। सन् 2011 में इस नाट्योत्सव को विस्तार देकर अखिल भारतीय स्तर का बनाया जाना इनका सराहनीय कदम माना जायेगा। सन् 2014 में बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ रंगकर्मी के लिए सम्मानित हुए। सन् 2016 में इन्हें 'प्रांगण' नाट्य संस्था की ओर से पाटलिपुत्र अवार्ड से विभूषित किया गया।

डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी
सचिव
मगध कलाकार, पटना
09334525657

डॉ॰ चतुर्भुज द्वारा 1952 ई॰ में स्थापित नाट्य संस्था-'मगध कलाकार' के सचिव पद (सन् 1970 ई॰ से) को गौरवान्वित करने वाले डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी लेखन, अभिनय, निर्देशन, पत्रकारिता आदि विद्याओं से जुड़े रहे। सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार, पटना में सेवा करते हुए इन्होंने राज्य सरकार के महत्त्वपूर्ण आयोजनों का मंच संचालन किया। विशेष रूप से पटना के गाँधी मैदान में स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस जैसे राष्ट्रीय आयोजनों में डॉ॰ प्रियदर्शी की आलंकारिक उद्घोषणा पिछले 23 वर्षों से दर्शकों के बीच चिर-परिचित बनी रही है। बिहार में नाट्य प्रदर्शन को मनोरंजन कर से मुक्त कराने में, नाटक को रोजी-रोटी से जोड़ने के लिए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्य शास्त्र विषय की पढ़ाई शुरू कराने में, प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में राशि एकत्र कराने आदि में मगध कलाकार के सचिव की हैसियत से नाटककार डॉ॰ चतुर्भुज के कष्ट-साध्य प्रयास में डॉ. अशोक प्रियदर्शी एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी बने रहे। रेडियो, दूरदर्शन, पटना से इनके लिखे कई नाटकों का प्रसारण के साथ सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के मंच से डॉ॰ प्रियदर्शी लिखित क्रान्तिकारी सुभाष, डोमकच, खुदीराम बोस, जैसे नाटकों का मंचन किया गया। डॉ॰ चतुर्भुज के सम्पूर्ण रंगमंचीय नाटकों का संकलन तीन खंडों में चतुर्भुज रचनावली के नाम से, और डॉ॰ चतुर्भुज की आत्मकथा-'मेरी रंगयात्रा', श्यामजी सहाय लिखित 'बुजुर्गों के लिए' पुस्तकों का सम्पादन और दैनिक जागरण की ओर से बुजुर्गों के लिए प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'बागवान' में संपादकीय सहयोग प्रदान किया है। दिसम्बर, 2012 में सरकारी सेवानिवृत्ति। 2010 से डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव में डॉ॰ प्रियदर्शी, वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार के सहयोगी बन कर कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ रहे हैं। बिहार आर्ट थिएटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक डॉ. प्रियदर्शी इन दिनों मासिक पत्रिका 'राजनीति चाणक्य' को युवा पीढ़ी के बीच लोकप्रिय बनाने में संलग्न हैं। साथ ही बुजुर्गों के लिए स्थापित निःशुल्क सामाजिक संस्था 'पुरोधालय' के कार्यकारी अध्यक्ष हैं।

आयोजन समिति के सदस्य : गणेश सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, कृष्णानंद, डॉ॰ शैलेश्वर सती प्रसाद, डॉ॰ किशोर सिन्हा, रमेश सिंह, प्राणशु, जगदीश दयानिधि, कुमार कश्यप, नीलम सिंह, सुनील कुमार सिन्हा, मदन शर्मा, शिवशंकर रत्नाकर, कृष्ण मोहन प्रसाद, आदिल रशीद, रोहित कुमार, कुमार अनुपम, कुमार आर्यदेव, कन्हैया प्रसाद, नीलेश्वर मिश्रा, शीलभद्र, हीरालाल, राजीव रंजन श्रीवास्तव, राजेश शुक्ला, फकीर मुहम्मद, किरण कुमारी, प्रेक्षा, प्रशस्ति, अनिमा, तूलिका, निधि, सुशील शर्मा, अनीस अंकुर, यामिनी, विजय कुमार, विशाल तिवारी, सुजीत कुमार, राजकुमार सिंह, सुमन पटेल, धर्मेश मेहता, जय प्रकाश, तनुष्का राय, रीना कुमारी, साहिल सिंह, अरविन्द सिंह, सुनीता भारती, विशाखा एवं प्रणय सिन्हा इत्यादि।

Scanned by CamScanner

रंगमंच का महत्व

बिहार में हिन्दी नाटकों का विकास

डॉ. चतुर्भुजजी फोटो

डॉ. अशोक प्रियदर्शी

लेखक

संस्कृत नाटक भारतवर्ष का प्राचीनतम नाटक माना जाता है। लेकिन ऐसे साहित्यिक नाटक बुद्धिजीवियों या पढ़े-लिखे लोगों के लिए ही सीमित रहा। आमजन के मनोरंजन हेतु लोक नाटक अथवा परम्पराशील नाटक ही रहे। लोक नाटक/परम्पराशील नाटक का उदय धार्मिक अनुष्ठानों से माना जाता है। गाँव-घर के पर्व-त्योहारों की घटनाएं आज भी देखने को मिलती हैं। उन्हीं भारतीय परम्पराशील नाटकों अथवा लोक नाटकों में प्रमुख हैं- रामलीला, रासलीला, असम का अंकिया नाटक, बिहार का किर्तनियाँ और बिदेसिया नाटक, बंगाल का जात्र, मध्य प्रदेश का मांच, राजस्थान का ख्याल और रम्मत, गुजरात की भवई, महाराष्ट्र का तमाशा, कर्णाटक का दाडाटा, आंध्र प्रदेश की कुच्चीपुडि, तमिलनाडु का भागवत मेल, मैसूर का यक्षगान, केरल का कूडियाट्म और चविट, हिमाचल प्रदेश का रियाला, उत्तर प्रदेश की नौटंकी, कश्मीर का भाण्डजशन आदि। नाटकों के विकास में साहित्यिक नाटक के साथ परम्पराशील अथवा लोक नाटकों का योगदान भी महत्त्वपूर्ण रहा है। यहाँ हम बिहार के हिन्दी नाटक और लोक नाटकों पर ही चर्चा करेंगे। बिहार में हिन्दी नाटकों का आगमन का कारण क्या था, रंगमंच-रेडियो आदि के माध्यम से यहाँ नाटकों का प्रचार-प्रसार कैसे हुआ, विशेषकर इसकी चर्चा यहाँ करेंगे।

'नट' धातु से उत्पन्न 'नाटक' के दो काव्य रूप रहे हैं-श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य वह नाटक है जिससे व्यक्तिगत रसानुभूति होती है और दृश्य काव्य वह नाट्य विधा है, जिसके अन्तर्गत अनेक कलाएं सम्मिलित होकर अनेक लोगों के सहयोग से अनेक लोगों में रसानुभूति उत्पन्न कर, तृप्त करती है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी स्वीकार किया है कि नाटक का रंगमंच से जुड़ाव अनिवार्य है। कालान्तर में रेडियो के आगमन के बाद से नाटक के स्वरूप में बदलाव आता गया। लेखन विधा रंगमंच, रेडियो, एकांकी नाटक, प्रायोगिक नाटक, लाइट एण्ड साउण्ड, नुक्कड़, टैरिस थियेटर तक पहुँच गया। आधुनिक तकनीक हिन्दी नाटक के प्रचार-प्रसार में जुड़ता गया।

संस्कृत, फारसी, बंगला, मराठी आदि भाषाओं के जानकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने मात्र पैंतीस वर्ष के अपने जीवन काल में आधुनिक हिन्दी भाषा में लगभग 237 छोटी-बड़ी रचनाएं, पूरे भारत में स्थापित कर, अपनी एक अलग पहचान बना ली। वे मानते थे कि सामाजिक कुरीतियां, आपसी वैमनस्य, देश-भक्ति, साम्प्रदायिक सद्भाव, अन्धविश्वास आदि के लिए जन-मानस के बीच जागरूकता फैलाने में हिन्दी नाटक साहित्य की भूमिका सशक्त होगी। लेकिन इसके लिए नाटक को मंच से जोड़ना आवश्यक है। भारतेन्दु युग में पारसी नाटकों का आधिपत्य था। भड़कीले सेट, सस्ते मनोरंजन, ओवर ऐक्टिंग, शेरो-शायरी, तुकबन्दी भरे हिन्दी-उर्दू मिश्रित संवाद आदि मिला कर पारसी नाटक, दर्शकों को अपनी ओर आसानी से आकर्षित करते थे। उसी माहौल में पूरे भारत में आधुनिक हिन्दी की जड़ स्थापित करना रेगिस्तान में फूलों का गुलशन सजाने सा था। भारतेन्दु के अनूदित-रूपान्तरित लगभग सात नाटक हैं, जिनमें चर्चित हैं-विद्या सुन्दर (1868), रत्नावली (1868), धनंजय विजय और व्यायोग (1873), मुद्राराक्षस (1874-75), दुर्लभ बन्धु (1880) आदि। ग्यारह मौलिक नाटकों में चर्चित हैं-सत्य हरिश्चन्द्र (1875), भारत दुर्दशा (1876), भारत जननी और नीलदेवी (1877), अंधेर नगरी (1878) आदि। 28 अप्रैल 1927 को 'आज' में प्रकाशित गोपाल दास गहमरी की एक रिपोर्ट से जानकारी मिलती है कि बयालिस वर्ष पूर्व बलिया में 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने राजा हरिश्चन्द्र की भूमिका निभाई थी और अन्य कलाकारों में यशस्वी लेखक बाबू राधाकृष्ण दास और कवि रवि दत्त शुक्ल ने भी अभिनय किया था। भारतेन्दु की भूमिका देख कर अंग्रेज महिला-पुरुष दर्शकों की आंखें भर आयीं थीं। नाटक समाप्ति के बाद तत्कालीन अंग्रेज कलक्टर ने भाव विभोर होकर घोषणा की कि-श्मशान घाट पर डोम के रूप में राजा हरिश्चन्द्र और रानी शैव्या का दृश्य इतना कारूणिक था कि अंग्रेज पुरुष-महिलाओं को आंसू रोक पाना कठिन था।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का ही प्रभाव था कि बिहार के विभिन्न स्थानों पर आधुनिक हिन्दी भाषा में नाटक लिखे जाने लगे और उनका मंचन भी होता रहा। पारसी नाटकों से प्रभावित होकर उस काल में बंगाल नेशनल थिएटर, पारसी एलिफिन्सटन मंडली की धूम, बिहार में बनी थी। पटना, गया, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, आरा, भागलपुर आदि शहरों के दर्शक इन नाटकों को देख कर बेतरह सम्मोहित होने लगे थे। सभी लोगों में एक बेचैनी उठ खड़ी हुई थी कि आधुनिक हिन्दी भाषा में इस तरह के नाटक भी लिखे जा सकते हैं और खेले जा सकते हैं!

Scanned by CamScanner

उस समय सैयद आगा हसन अमानत का एक हिन्दी नाटक 'इन्दर सभा' तो मील का पत्थर साबित हुआ था। लगभग 60-65 वर्षों तक यह नाटक भारत के विभिन्न प्रदेशों में लगातार खेला जाता रहा। नाटक देखने के लिए हर समय दर्शकों की भीड़ उमड़ जाती थी। इस लोकप्रिय नाटक का अनुवाद अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं में भी की गयी। लंदन की इंडिया ऑफिस लाईब्रेरी में इस नाटक के 40-50 संस्करण की कुछ प्रतियाँ आज भी उपलब्ध हैं। लोगों ने महसूस किया कि अमानत कोई दरबारी नाटककार नहीं थे, वे जनता के नाटककार थे। 1 जनवरी 1865 के 'बिहार बन्धु' में समाचार छपा था कि कल बुधवार 31 दिसम्बर 1884 को 'इन्द्र सभा' का अभिनय बिहार थिएट्रिकल ट्रूप नामक कम्पनी की ओर से बिहार प्रदेश में भी किया गया। बिहार प्रदेश में हिन्दी नाटकों के प्रचार-प्रसार में पंडित केशवराम भट्ट का 'बिहार बन्धु प्रेस' और बाबू रामदीन सिंह के खड्ग विलास प्रेस का योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाएगा। पंडित केशवराम भट्ट को अगर बिहार की हिन्दी पत्रकारिता का पितामह कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारत का हिन्दी पत्र 'उदण्ड मार्तण्ड' से प्रेरित होकर उन्होंने हिन्दी साप्ताहिक 'बिहार बन्धु' का प्रकाशन 1872 में कलकत्ता से किया। जब डॉ० ग्रियर्सन के प्रयास से पटना में हिन्दी टाईप की ढलाई की गयी तब 1874 से 'बिहार बन्धु' का प्रकाशन पटना से किया जाने लगा। 1877 ई० से पंडित केशवराम भट्ट ने इस पत्र का सम्पादन प्रारम्भ किया और अपने जीवन के अन्तिम समय (1904) तक वे सम्पादक का दायित्व निभाते रहे।

पटना में प्रदर्शित पारसी शैली के नाटकों की रिपोर्टिंग पं० केशवराम भट्ट को सदैव उद्वेलित करता रहा कि क्या खड़ी बोली हिन्दी में नाट्य-लेखन सम्भव नहीं? पारसी नाटकों की तरह इसके मंचन में पटना के रईस, वकील, मोख्तार, बुद्धिजीवियों का सहयोग नहीं मिलेगा? इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर श्री भट्ट ने सन् 1876 ई० में पटना में 'पटना नाटक मंडली' की स्थापना की। 'शमशाद सौसन' नामक नाटक लिखा, जिसमें उन्होंने अंग्रेज मजिस्ट्रेटों की अतृप्त कामुकता, बेईमानी और अनाचार का यथार्थ चित्रण किया। नाटक की तैयारी के साथ इसका मंचन 1880 ई० में बिहार बन्धु प्रेस में किया गया। दर्शकों में पटना के प्रतिष्ठित लोग और बुद्धिजीवी रहे, जिनके चेहरे पर एक संतुष्टि के भाव उत्पन्न हुए। आगे चल कर इस संस्था की ओर से ही भट्ट का दूसरा नाटक 1888 ई० में 'सज्जाद सुंबुल' का मंचन बिहार बन्धु प्रेस में ही किया गया। लेखक श्री भट्ट ने स्वयं इस नाटक में सूत्रधार की भूमिका निभाई थी। पटना नाटक मंडली को गतिशील बनाए रखने में भारतेन्दु के मित्र और हिन्दी नाटककार पंडित दामोदर शास्त्री के साथ पंडित साधो राम भट्ट, डुमरांव स्टेट के मैनेजर, बाबू शिवशरण लाल, आरा के वकील श्यामलाल आदि का योगदान विस्मृत नहीं किया जा सकता। इस संस्था का ऐसा प्रभाव रहा कि सूरजपुरा, डुमराँव, दरभंगा आदि शहरों में भी कई संस्थाएँ प्रकाश में आयीं।

पारसी थिएटर के रंगकर्मी और आकाशवाणी पटना से सेवानिवृत रहे पंडित जगन्नाथ शुक्ल ने एक साक्षात्कार में बताया था कि पटना सिटी में रामलीला काफी लोकप्रिय रही। पंडित गोवर्धन शुक्ल के प्रयास से 1905 ई० में पटना सिटी के हाजीगंज मुहल्ले में- रामलीला नाटक मंडली की स्थापना की गयी थी। तीन अंकों का नाटक 'कृष्ण सुदामा' का मंचन किया गया था जिसमें स्त्री पात्रों की भूमिका पुरुषों ने की थी। उन्होंने यह भी बताया था कि गुलजारबाग में 'बेलवरगंज नाटक मंडली उर्फ लल्ला बाबू का क्लब', रग्घु मिस्त्री की 'महावीर थिएट्रिकल कम्पनी', 'मीतनघाट क्लब' आदि संस्थाएं भी कार्यरत रही थीं लेकिन अल्पवधि में ही ये संस्थाएं बन्द भी हो गयीं। सबसे अधिक समय तक गतिशील रही संस्था थी 'कूचा नाट्य परिषद'।

पटना सिटी के नाट्य आन्दोलन का प्रभाव बिहार के दूसरे शहरों पर भी पड़ा। 'बिहार का साहित्य' पुस्तक से जानकारी मिलती है कि मुजफ्फरपुर में भी एक हिन्दी नाटक मंडली- 'धर्म रक्षिणी सभा' थी। इस संस्था की ओर से पं० अम्बिका दत्त व्यास लिखित एक संक्षिप्त रूपक 'धर्म पर्व' का मंचन किया गया था। बिहार का साहित्य पुस्तक के प्रकाशक ने अपनी भूमिका में उल्लेख किया है कि धर्म संरक्षिणी सभा के नाटकों का आनन्द उन्होंने भी उठाया था। दर्शक दीर्घा में बड़े-बड़े हाकिम-हुक्काम, वकील मुख्तार की जमघट होती थी। संस्था में बालक भी अभिनय करते थे और उनके अभिनय इतने सजीव और प्रभावोत्पादक होते थे कि कारूणिक दृश्य देखकर दर्शकों की आँखें भींग जाती थी। वे आनन्दित होते थे।

पं० सकलदेव नारायण पाण्डेय की पुस्तक 'बाबू जैनेन्द्र किशोर की जीवनी' से ज्ञात होता है कि भोजपुर के आरा शहर के रईस, बाबू जैनेन्द्र किशोर जी भारतेन्दु के विचारों से प्रभावित होकर 1897 में 'जैन नाटक मंडली' की स्थापना आरा में की थी। इस मंच से मुख्य रूप से जैन धर्म के नाटक अभिनीत होते थे। जैनेन्द्र किशोर उन नाटकों में विदूषक की भूमिका करते थे। अल्प अवधि में ही जैन नाटक मंडली मृतप्राय होती गयी और 'सार्वजनिक नाटक मंडली' प्रकाश में आयी। कुशल अभिनेता और लेखक जैनेन्द्र किशोर ने इस मंच से कई

Scanned by CamScanner

स्वलिखित नाटकों का मंचन किया। उनके चर्चित नाटक हैं- कलिकौतुक, मनोरमा, अंजना, सोमसती, कृष्ण दास आदि। कालान्तर में हिन्दी नाटककार पं॰ ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने 'मनोरंजन नाटक मंडली' की स्थापना आरा में की। इस नाटक मंडली के लोकप्रिय अभिनेताओं में लेखक ईश्वरी प्रसाद शर्मा के साथ बाबू शिवपूजन सहाय, बाबू शुकदेव सिंह, बाबू कृष्णजी सहाय, बाबू राजेन्द्र प्रसाद उर्फ लल्लू जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

छपरा (सारण) में भी हिन्दी नाटकों की गतिविधि दिखने लग गयी थी। शिक्षित लोगों के प्रयास से 'छपरा क्लब' की स्थापना की गयी। कुशल नाटककार बाबू लक्ष्मी प्रसाद लिखित पौराणिक नाटक 'उर्वशी' का सफल मंचन किया गया। इस नाटक में शहर के रईस, वकील- मुख्तार के साथ उच्च पदाधिकारियों ने भी अभिनय किया था। कालान्तर में भारतेन्दु युग के नाटककार जगन्नाथ शरण लिखित नाटक 'प्रह्लाद' का मंचन किया गया। नरसिंह की भूमिका शहर के प्रतिष्ठित अभिनेता मथुरा प्रसाद ने की थी जिनकी उम्र 65 वर्ष की थी। नाटक इतना सफल हुआ कि काफी दिनों तक छपरा शहरवासी 'प्रह्लाद' नाटक की चर्चा करते थकते नहीं थे। आगे चलकर एमेच्योर ड्रामेटिक एसोशिएसन की स्थापना की गयी।

बिहार के अन्य शहरों की लोकप्रिय संस्थाएं रहीं- बिहारी क्लब और मगध आर्टिस्ट्स (बख्तियारपुर), हिन्दी नाटक समाज (पण्डारक), तरुण भवतारिणी नाट्य समिति (सोनपुर), हिन्दुस्तान मित्र मण्डल नाट्य समिति (सासाराम), जनता ड्रामेटिक क्लब (कोयलवर), आदि। मेरी मान्यता है कि इन क्षेत्रों के इर्द-गिर्द अन्य जितनी भी संस्थाएं स्थापित की गयी उनकी प्रेरणा, उपर्युक्त संस्थाएं ही रही हैं। बिहार की अन्य उल्लेखनीय नाट्य संस्थाएं रही हैं- **पटना की रंग संस्थाए**- यंगमेंस ड्रामेटिक एसोसिएशन (1934), फ्रेंड्स क्लब, पाटलिपुत्र कला मंदिर, आर्ट्स एण्ड आर्टिस्ट (1948), नीलकमल कला मंदिर (1948), मगध कलाकार (1952) पटना ड्रामेटिक क्लब (1960) पुष्पांजलि, प्रेमचन्द कला परिषद (1961), बिहार आर्ट थिएटर (1961) कला संगम (1962), चतुरंग (1966), मगध कला परिषद (1968), अरंग (1970), रूप रंग (1970), माध्यम (1974), पाटलिपुत्र कला निकुंज (1975), प्रांगण, निर्माण कला मंच (1988), अभिनव (1976), नटलोक (1976), सूत्रधार (1978), एच॰एम॰टी॰, किसलय (1980), कला त्रिवेणी (1981), इप्टा (1975), कला-जागरण (1990) आदि। **बेगूसराय की संस्थाएं**- कालिदास कला मंच, ललित कला परिषद, सरस्वती नाट्य परिषद, तरुण कला मंदिर, नव तरंग, प्रवासी आदि। **भागलपुर की संस्थाएं**- अभिनय भारती, पूर्वा, दिशा आदि। **पण्डारक की संस्थाएं**- पुण्यार्क कला निकेतन, किरण कला निकेतन आदि। **नवादा की संस्थाएं**- स्वर संगम (1973) आदि। **आरा की संस्थाएं**- रंगमंच, कथा लोक, कला संगम, अभिनय, कामायिनी, युवानीति आदि।

बिहार के लोक नाटक- विदेसिया शैली के जनक माने जाने वाले भिखारी ठाकुर का जन्म सन् 1889 ई॰ में कुतुबपुर गाँव (सारण) में हुआ। उन्होंने समाज के अन्ध-विश्वास, पारिवारिक विद्रूपता आदि विषयों को अपने लोकप्रिय भोजपुरी नाटकों में स्थान दिया। उनके चर्चित नाटक हैं- राधेश्याम, द्रौपदी पुकार, भाभी विलाप, गबरघिचोर, गंगा स्नान, भाई विरोध, पुत्र वध, विधवा विलाप, बिदेसिया, कलयुगी प्रेमी, राम विवाह, कृष्ण लीला, बेटी बेचवा, ननद-भौजाई आदि। प्राचीन काल से बिहार के अन्य लोक नाटकों में चर्चित रहे हैं- डोमकच, जट-जटिन, विद्यापत नाच और कीर्तनियाँ, झिझिया आदि।

कालक्रम के अनुसार नयी तकनीक का प्रभाव भी हिन्दी नाट्य लेखन और मंचन पर पड़ना स्वभाविक है। नाट्य लेखन में परिवर्तन होता गया। नाटक, पूर्णकालिक नाटक, एकांकी नाटक, नुक्कड़ नाटक और टैरिस थिएटर तक पहुँच गया। रेडियो प्रसारण ने नाट्य लेखन को अलग विधा का रूप दिया। गीति नाट्य, संगीत रूपक, पद्य नाटकों का प्रचलन प्रारम्भ हो गया। चाहे कुछ भी हो बिहार में हिन्दी नाट्य-लेखन परवान चढ़ता गया। नाट्य विधा ने श्रोताओं और दर्शकों में एक अलग स्फूर्ति पैदा की। कई कवि, साहित्यकार, नाटककार और कलाकारों को रेडियो ने प्रेरणा दी और वे श्रोताओं के समक्ष लोकप्रिय हुए हैं। आकाशवाणी, पटना की स्थापना 26 जनवरी 1948 को हुई। आकाशवाणी, पटना ने कलाकार, लेखक के रूप में जिन्हें प्रकाश में लाया और प्रतिष्ठा दिलायी वे हैं- पं॰ जगन्नाथ शुक्ल, पुष्पा आर्याणी, शत्रुघ्न राजीपुरी, डॉ॰ सिद्धनाथ कुमार, जनार्दन राय, मधुकर सिंह, श्याम मोहन अष्ठाना, डॉ॰ जितेन्द्र सहाय, गणेश सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, हिमांशु श्रीवास्तव, सत्या सहगल, शांति देवी, राधाकृष्ण प्रसाद, मनोरमा बाबा, डॉ॰ चतुर्भुज, रॉबिन शॉ पुष्प, आर॰एस॰ चौपड़ा, सुमन कुमार, अभय सिन्हा, सुशील शर्मा, शिवजी सिंह, आर॰पी॰ तरुण, अजीत गांगुली, प्रेमलता मिश्र प्रेम, शिवशंकर रत्नाकर, ज्योतिर्मयी श्रीवास्तव, भोला प्रसाद यादव, श्यामली चक्रवर्ती, डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी, सतीश आनन्द, प्यारे मोहन सहाय, रामवृक्ष

Scanned by CamScanner

बेनीपुरी, कमलेश्वरी प्रसाद वर्मा, बिलास बिहारी, विजय अमरेश, विशुद्धानन्द, प्रो॰ रामेश्वर सिंह काश्यप, फणीश्वरनाथ रेणु, प्रफुल्लचन्द्र ओझा मुक्त, गोपाल प्रसाद, डॉ॰ शंकर प्रसाद, महावीर सिंह आजाद, डॉ॰ एन॰एन॰ पाण्डेय, सतीश प्रसाद सिन्हा, कन्हैया आदि। नाट्य गतिविधियों को क्षेत्रीय भाषाओं और युवाओं तक प्रचारित करने में आकाशवाणी, पटना द्वारा निर्धारित आरती, भारती, मागधी और प्रतिदिन दो घंटे तक प्रसारित होने वाला कार्यक्रम युववाणी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इन कार्यक्रमों के द्वारा मगही, मैथिली, भोजपुरी के नाटककार और कलाकार भी सामने आये। 1962 में चीनी आक्रमण के समय प्रो॰ रामेश्वर सिंह काश्यप द्वारा लिखित और अभिनीत धारावाहिक नाटक 'लोहासिंह' इतना लोकप्रिय हुआ कि आकाशवाणी पेकिंग की ओर से एक टिप्पणी की गयी कि जवाहरलाल नेहरू ने आकाशवाणी पटना में लोहा सिंह नामक एक भैंसा पाल रखा है। आकाशवाणी पटना केन्द्र से संस्कृत, बंगला एवं विदेशी भाषाओं के क्लैसिक ग्रंथों और कहानियों का हिन्दी नाट्य रूपान्तरण कर राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारण किया गया। आनन्दमठ, शकुन्तला, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानियाँ, ब्रेख्त और चेखव की अमर रचनाओं का नाट्य रूपान्तरण, जातक कथाएं, पंचतंत्र आदि उनमें प्रमुख हैं।

हिन्दी साहित्य और संस्कृति के रक्षक रहे जगदीशचन्द्र माथुर को बिहार कभी विस्मृत नहीं कर सकता। वैसे वे शाहजहाँपुर उत्तर प्रदेश के निवासी थे, लेकिन 1944 से 1963 तक उनका कार्यक्षेत्र बिहार प्रदेश ही रहा। 1941 में पूरे भारतवर्ष में चौथे स्थान पर चयनित आई॰सी॰एस॰ करने वाले श्री माथुर की पहली पोस्टिंग वैशाली जिला में एस॰डी॰ओ॰ के रूप में हुई थी। वैशाली महोत्सव के शुभारंभ से लेकर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, नव नालन्दा महाविहार, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, अरबी-फारसी शोध संस्थान आदि इनकी ही देन है। बिहार के हिन्दी नाट्य साहित्य में योगदान के रूप में इनके प्रमुख हिन्दी नाटक है- भोर का तारा, ओ मेरे सपने, मेरे श्रेष्ठ रंग, वैशाली लीला, कोणार्क, बंदी, शारदीया, पहला राजा, दशरथनंदन, कुँवर सिंह की टेक, गगन सवारी आदि।

बीसवीं शताब्दी के बिहार प्रदेश के लोकप्रिय नाटककारों के चर्चित नाटक रहे हैं - **शिवसागर मिश्र**- पहिया का समय, गुड़िया और जिक्र। **रामेश्वर सिंह काश्यप**- समाधान, नीलकंठ निराला, लोहा सिंह, बिल्ली की खोज, कैलेण्डर का चक्कर, बेकारी का इलाज, काया पलट, उलट फेर आदि। **सकल नारायण शर्मा**- अपराजित, ब्रह्मचर्य और सच्चरित्र। **आरसी प्रसाद सिंह**- मदनिका, धूप-छाँह, इन्द्रधनुष, ऋतुराज, जब धरती गाती है आदि। **जानकीवल्लभ शास्त्री**- पाषाणी, तमसा, गंगावतरण, उर्वशी, वासन्ती, मंजरी, गोपा आदि। **डॉ॰ सिद्धनाथ कुमार**- अश्वमेध, इतिहास का धूमकेतु, चौदह वर्ष, पाँचवीं बेटी, टूटा हुआ मन, संघर्ष, लौह देवता, रंग और रूप, सृष्टि की सांझ आदि। **मधुकर गंगाधर**- आकाश पाताल, विषपान और भारत भाग्य विधाता। **रामबृक्ष बेनीपुरी**- अम्बपाली, सीता की माँ, संघमित्र, अमर ज्योति, राम राज्य, नेत्रदान, नया समाज, विजेता आदि। **राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह**- अपना पराया, धर्म की धुरी, नजर बदली-बदल गये नजारे। **मोहनलाल महतो वियोगी**- अफजल वध, सत्याग्रह, धोखा, तथास्तु, दांडी यात्रा, कसाई, धरती संतान, शिवाजी और परिवर्तन। **आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा**- पराजित मंजरी, सुजान, चिकित्सा का चक्कर, युगधर्म, शाहजहाँ के आँसू, आचार्य द्रोण आदि। **डॉ॰ चतुर्भुज**- रावण, शकुन्तला, मेघनाद, कलिंग विजय, सिकन्दर पोरस, पाटलिपुत्र का राजकुमार, कालसर्पिणी, टीपू सुल्तान, शाही अमानत, अरावली का शेर, झांसी की रानी, बहादुरशाह, पीरअली, कंस वध, नदी का पानी, बाबू विरंचीलाल, बन्द कमरे की आत्मा, कर्ण, श्रीकृष्ण नूरजहाँ, कारागार, मीरकासिम, रेत की दीवार, जहाँआरा, जय पराजय, शेरशाह आदि। **मदन साहित्यभूषण**- दीपशिखा, हमें जीने दो, भारत सम्राट चन्द्रगुप्त, मानस अवतरण, क्रांति की मशाल, और वीर प्रतिज्ञा। **बाबू रामसिंह लमगोड़ा**- प्रणय पल, कोशा, वासवदत्ता तिष्यरक्षिता, सब शेष हो गया, मस्तानी, गाँव की ओर, गुम्बद गिर गया, वह मौत नहीं-जिन्दगी है, भगवान श्रीकृष्ण के अन्तिम दिन, वह शम्बूक, पारिजात, कच देवयानी आदि। **डॉ॰ जितेन्द्र सहाय**- ट्यूशन का चक्कर, इलाज, जब लूसी खो गयी, पुस्तक विमोचन, सौदेबाजी, कविता पर पाबन्दी, उद्घाटन, फैसला, अप्रिलफूल, कम्प्यूटर बीबी, एक पर एक, बगल का किरायेदार, निन्यानवे का फेर, मुंडन आदि। **अनिल कुमार मुखर्जी**- कारखाना, बिन दुल्हन की शादी, पालकी, विप्पलवी, बहुरूपी, हम जीना चाहते हैं, भगवान रामचन्द्र एक अच्छे आदमी की खोज में, आसाम मेल, मिनी और काबुलीवाला, जली खिचड़ी, जय बंगलादेश, कॉकटेल, कंचन रंग, नया बंगला आदि। **परेश सिन्हा**- गाँधी नहीं मरेगा। **हिमांशु श्रीवास्तव**- पैसा बोलता है, चण्डीदास। **राधाकृष्ण प्रसाद**- ढलती शाम की यात्रा, डूबते उतराते, यातना के पथ, तृष्णा, एक अंधी गली, जीवन का गणित आदि। **हृषिकेश सुलभ**- अमली, मिट्टी की गाड़ी, बिदेसिया। **जनार्दन राय**- एक और सूर्यास्त, बहुरूपिया। **मधुकर सिंह**- कुतुब बाजार, बाबूजी का पासबुक, लाखो। **कमलेश्वर सिंह कमलेश**- कारण काल किनारा। **डॉ॰ मिथिलेश कुमारी मिश्र**- धनंजय विजय,

Scanned by CamScanner

कीचक वध। **डॉ॰ किशोर सिन्हा**- चारुलता, कातिल की माँ, स्वतंत्रता की पुकार, अतीत का वातायन आदि। इनके अलावा और भी कई नाटककारों ने बिहार की भूमि को हिन्दी नाटक प्रदान कर सींचा है। चर्चित हैं- जनार्दन मिश्र, परमेश, सतीश प्रसाद सिन्हा, कृष्ण कुमार अम्बष्ठ, तेज नारायण झा, जैनेन्द्र किशोर जैन, दिनेश प्रसाद वर्मा, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, ब्रज बिहारी शरण, भगवती शरण मिश्र, रामदीन पाण्डेय, रामावतार मिश्र, डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी, सतीश कुमार मिश्र, चक्रधर, श्याम मोहन अष्ठाना, अनिल पतंग, अरुण सिन्हा, मणि मधुकर, राधाकृष्ण सहाय आदि।

जन-जागरण के लिए नाटक की भूमिका महत्वपूर्ण है। यही मूल कारण है कि सरकारी/गैर सरकारी संस्थाएं अपने उत्पाद और उपलब्धियों के प्रचार-प्रसार के लिए नाट्य दल का सहारा लेती है और उन्हें पर्याप्त लाभ भी मिलता है। आज पूरे बिहार में हिन्दी नाटकों पर नये-नये प्रयोग हो रहे हैं। गीत-संगीत को मिश्रित कर बिदेसिया शैली को अंगीकार कर नये-नये नाटक लिखे जा रहे हैं। दर्शक और श्रोता उन्हें पसंद भी कर रहे हैं। बिहार प्रदेश में हिन्दी रंगमंच और नाट्य लेखन का भविष्य पूर्व की भाँति सदैव उज्ज्वल बना रहेगा।

दी मगध सेन्ट्रल-कॉ-ऑपरेटिव बैंक लि., गया

क्षेत्र-गया, जहानाबाद, अरवल

(शाखा - गया, टेकारी, वजीरगंज, बाराचट्टी, शेरघाटी, इमामगंज, मखदुमपुर, जहानाबाद, अरवल

अध्यक्ष

वर्त्तमान सुविधा

1. ATM CARD	2. RTGS / NEFT	3. चेक सुविधा
4. Core Banking	5. IMPS	6. Saving Account
7. Current Account	8. KCC Account	9. Fixed / Recurring Deposit

दैनिक जमा योजना, ATM वैन एवं माइक्रो ATM की सुविधा भी प्रारंभ की जा रही है।

सहकारिता बंधु एवं आम जनता से अनुरोध है कि मगध सहकारिता बैंक से जुड़कर सुविधा का लाभ उठाएँ एवं सहकारिता के विकास में भागीदार बनें।

निवेदक

अमर कुमार झा
प्रबंध निदेशक
मगध सेंट्रल कॉ-ऑपरेटिव बैंक लि0, गया

उमेश कुमार वर्मा
अध्यक्ष
मगध सेंट्रल कॉ-ऑपरेटिव बैंक लि0, गया

Scanned by CamScanner

किशोर केशव : रंगकर्मी व पत्रकार

किशोर केशव
रंगकर्मी व पत्रकार

जन्म : 30 दिसम्बर, 1966 ।

पैतृक निवास : गाँव-मकरन्दा, डाकघर+ थाना - मनीगाछी, जिला-दरभंगा।

शिक्षा : एम.ए. (श्रम एवं समाज कल्याण), पीजी डिप्लोमा इन जर्नलिज्म।

साहित्य, संस्कृति, रंगमंच, रेडियो और मीडिया में समान रूप से सक्रियता। मूलतः मैथिली संस्कृतिकर्मी, पर अन्य भाषाओं में भी पहचान। नाट्य निर्देशक-अभिनेता, अभिकल्पक प्रशिक्षक। कवि, अनुवादक, समीक्षक और उद्घोषक। वाद-विवाद, वक्तृता, काव्यपाठ और नाटक के लिए अनेक राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं में निर्णायक मंडल के सदस्य। प्रसिद्ध मैथिली नाट्य संस्था 'भंगिमा', पटना के संस्थापक सदस्य। प्रतिष्ठित 'पाटलिपुत्र नाट्य महोत्सव आयोजन समिति', पटना के संयुक्त सचिव। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (दिल्ली) के नाट्य कार्यशाला (1986) से प्रशिक्षित मैथिली रंगमंच के प्रथम रंगकर्मी। अद्यावधि लगभग दो दर्जन मैथिली नाटकों का निर्देशन तथा लगभग डेढ़ सौ मैथिली नाटकों के तकनीकी अभिकल्पक। विभिन्न भाषाओं के सात नाटकों का मैथिली में अनुवाद; अबतक उसके कई प्रदर्शन तथा कुछ पत्रिकाओं में प्रकाशित (पुस्तकाकार प्रकाशन की प्रतीक्षा में)। वर्ष 1984 से आकाशवाणी, पटना के बी हाई ग्रेड नाटक कलाकार तथा नैमित्तिक कॉम्पीयर/ उद्घोषक। लगभग एक सौ रेडियो नाटक, धारावाहिक में अभिनय। दर्जनभर टीवी धारावाहिक और वृत्त-चित्रों का लेखन एवं लगभग दो दर्जन टीवी धारावाहिकों औरी टीवी प्ले में अभिन्य। वर्ष 1994 से आकाशवाणी, पटना के नैमित्तिक मैथिली समाचार वाचक सह अनुवादक। 'दूरदर्शन', पटना तथा 'सहारा समय' (बिहार-झारखंड) टीवी चैनल के लिए विविध विषयक अनेक कार्यक्रमों का समन्वय व संचालन। मैथिली पत्रिका 'भाखा' तथा 'भाखा टाइम्स' के सम्पादकीय सहयोगी और मैथिली नाट्य पत्रिका 'भंगिमा' के कतिपय अंकों का सम्पादन। वर्ष 1992 से हिन्दी दैनिक 'राष्ट्रीय सहारा' के साथ पूर्णकालिक पत्रकारिता तथा सम्प्रति न्यूज एडिटर (पटना संस्करण)। 'राष्ट्रीय सहारा' के लिए दर्जनभर एडवरटोरियल मैगजीन का सम्पादन। प्रकाशित पुस्तकें : 'अन्तर्व्यथा' (1989)-संग काव्य संकलन, 'कन्नड़ वचन' (2016)-संग अनुवादक, रस्किन बॉन्ड कृत 'रस्टीक करतब' (2016)-अनुवाद, 'अक्षर पुरुष' (2016)-समालोचनात्मक संदर्भ ग्रंथ (संग सम्पादन), डॉ. वृन्दावन लाल वर्मा कृत 'रानी लक्ष्मीबाई' - अनुवाद (मुद्रणाधीन)। इनके अलावा अनेक कविता, निबंध, समीक्षा आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा पुस्तकाकार प्रकाशन की प्रतीक्षा में।

संपर्क : 6, आर्यावर्त कॉलोनी, 4/54-इन्द्रपुरी, पटना-800 024,
व्हाट्सएप : 9431020170, मो.- 8789820393

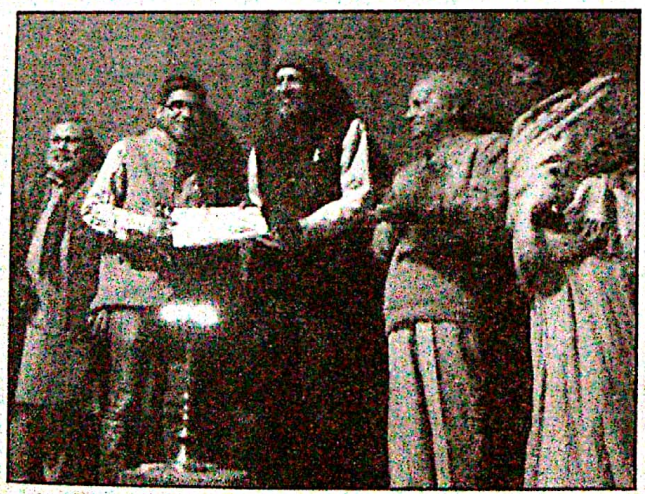

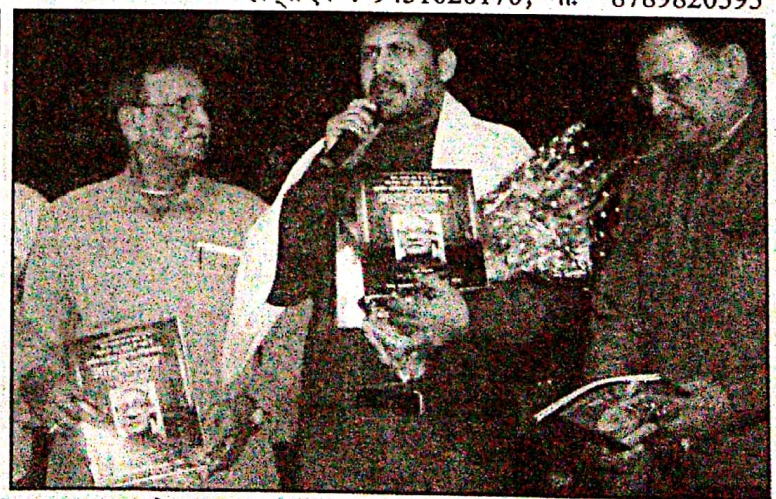

डॉ. चतुर्भुज नाट्य-पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित दो पत्रकार

Scanned by CamScanner

विजेता

04 मार्च (सोमवार), 2019

प्रस्तुति - कला-जागरण, पटना

लेखक - श्री रामवृक्ष बेनीपुरी **परिकल्पना एवं निर्देशक : सुमन कुमार**

कथासार - 'विजेता' की कथा तक्षशिला के एक जंगल से आरंभ होती है। चन्द्रगुप्त भालावेध के अभ्यास में निमग्न है। महत्वाकांक्षी अलक्षेन्द्र का भारत पर आक्रमण हो चुका है, वो विजयी बनकर लौट भी चुका है। चन्द्रगुप्त को नाटककार 'शस्त्र-विद्या में निपुण बनने का उपदेश देते थकते नहीं। चाणक्य ने किसी अपमान-विशेष में अपनी शिखा खोल रखी है। जब तक नंद वंश का संहार नहीं होगा, तबतक शिखा फिर से बंधेगी नहीं। चाणक्य स्वत: इसे शिखा मात्र नहीं, प्रतिहिंसा की ज्योति शिखा मानते हैं।

चन्द्रगुप्त क्षत्रिय कुमार है। वह एक तो संस्कारवश, दूसरे गुरु चाणक्य के आदेशवश उनके लक्ष्य को स्वीकार करता है। प्रेयसी चन्द्रा, चन्द्रगुपत के लक्ष्य भेद में सदैव सहायिका सिद्ध हुई है। चन्द्रगुप्त की माँ ने भी अपने वात्सल्य के साथ-साथ उसे सर्वदा प्रेरणा दी है। श्वेतकेतु अपनी स्वभाव कोमलता के बावजूद चन्द्रगुप्त के लक्ष्यवेध में कभी व्यवधान सिद्ध नहीं हुआ।

अभ्यास और संकल्प की दृढ़ता के फलस्वरूप चन्द्रगुप्त नंदवंश का नाश का पाता है और पाटलिपुत्र के राजसिंहासन पर अभिषिक्त होता है। यह सफलता चन्द्रगुप्त के महान उद्देश्य का प्रथम सोपान है। फिर अलक्षेन्द्र के प्रतिनिधि सेनापति सैल्यूकस की यवन सेना पर आक्रमण होता है। यवन सेनापति पराजित होकर अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से सम्पन्न कर देता है।

चन्द्रा यद्यपि चन्द्रगुप्त की प्रेयसी थी, किन्तु माँ ने उसे अपने पुत्र की अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार कर लिया है। चन्द्रगुप्त के हृदय का वह समग्र स्नेह जो चन्द्रा के लिए अब तक प्रच्छन्न रूपेण सुरक्षित था, आज यवन कन्या के आने से उमड़ पड़ता है। सम्राट को नींद नहीं आ रही। रात ढलने लगी है। गुरुदेव चाणक्य का यह निर्णय 'बसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धान्त को सिद्ध करता है, जैसा गुरुदेव कहते हैं। चन्द्रगुप्त को यह निर्णय अन्तत: स्वीकार है।

चन्द्रगुप्त चक्रवर्ती सम्राट बनता है। चाणक्य का स्वप्न साकार होता है। साम्राज्य की जो आसेतु हिमालय सार्वभौम ऋषि कल्पना थी, वह चन्द्रगुप्त के पूर्व किसी भी राज्य काल में साकार नहीं हुई थी। चन्द्रगुप्त के बाद भी वैसी अखंडता कभी रही नहीं। लेकिन इतनी महती उपलब्धि के बाद भी आज चक्रवर्ती सम्राट चन्द्रगुप्त, नीलगिरि की तलहटी में कुशासन पर जैन धर्म-विधान के अनुकूल साठ दिनों तक निर्जल-निराहार व्रत रखकर प्राण-त्याग का संकल्प लिए अधिष्ठित हैं।

चन्द्रा रो-विलख जाती है। श्वेतकेतु आग्रह कर जाता है, चाणक्य उपदेश दे जाते हैं। किन्तु सम्राट का निश्चय बदलता नहीं। चारो ओर हहाकार है। वो कहता है - जिस सम्राट को अपनी प्रजा हेतु अन्न तक दे पाने का सामर्थ्य नहीं, उसे दंड स्वरूप प्राण त्याग देना चाहिए। चन्द्रा से उत्पन्न कुमार का राज्याभिषेक करने के लिए चाणक्य, राजधानी लौट जाते हैं। सम्राट मृत्यु की प्रतीक्षा करते रह जाते हैं। 'विजेता' की यही कथावस्तु है।

पात्र-परिचय

चाणक्य - I	:	संजय राय
चाणक्य - II	:	मिथिलेश कुमार सिन्हा
चाणक्य - III	:	डॉ. शंकर सुमन
चन्द्रगुप्त	:	आमिर हक
श्वेत केतु	:	नीतीश कुमार
माता जी	:	सुनीता भारती
चन्द्रा	:	प्रीति कुमारी
प्रहरी - I	:	रॉकी
प्रहरी - II	:	अनुपम

आभार

मगध आर्टिस्ट्स, बिहार आर्ट थियेटर

❖

विशेष आभार

गणेश प्रसाद सिन्हा, अखिलेश्वर प्र. सिन्हा, कन्हैया प्रसाद, अभय सिन्हा, नीलेश्वर मिश्रा, सुशील शर्मा, अरविन्द कुमार, कुमार अनुपम,

❖

प्रस्तुति सहयोग

सुनीता भारती एवं रोहित

संगीत प्रभाव	:	ललित श्रीवास्तव
विशेष ध्वनि प्रभाव	:	अनुराग, मनु
वस्त्र विन्यास	:	रीना कुमारी एवं यामिनी
मेकअप	:	अशोक घोष, हीरा लाल राय एवं चन्दना घोष
विडियो इफेक्ट संपादन	:	अमरजीत शर्मा
प्रकाश	:	उपेन्द्र कुमार एवं राजकुमार शर्मा
मंच परिकल्पना	:	प्रदीप गांगुली
मंच निर्माण	:	सुनील कुमार एवं सीतेश कुमार

Scanned by CamScanner

पीरअली

05 मार्च (मंगलवार), 2019

प्रस्तुति - रंग-रूप, वैशाली

लेखक- डॉ. चतुर्भुज

परिकल्पना एवं निर्देशक : अंजारूल हक

कथासार- भोजपुर के लकवा गाँव में जन्म लेने वाले 1857 के अमर सपूत पीरअली का अधिकांश जीवन पटना में ही बीता था। उसका संबन्ध बहावी आन्दोलन से भी बना था। पटना में पीरअली की एक बुक बाइन्डिंग की दूकान थी। फिरंगियों के विरूद्ध हो रहे आन्दोलन में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। उस समय पटना के क्रूर कमिश्नर विलियम टेलर को इस बात की जानकारी मिल गयी थी कि गोरी सरकार के विरूद्ध पीरअली, लोगों के बीच जहर उगल रहा है। इसी बीच अफीम एजेन्ट मिस्टर लायल को आन्दोलनकारियों ने गोली मार दी। 3 जुलाई 1857 को पीरअली को कैद किया गया। लायल की हत्या का दोषारोपण कमिश्नर टेलर ने पीरअली पर मढ़ा। टेलर ने पीरअली का ट्रायल किया। उसने पीरअली से क्रांतिकारी साथियों का नाम जानना चाहा। लेकिन असफल रहा। लाचार होकर टेलर ने 7 जुलाई 1857 को गांधी मैदान, पटना के एक कोने पर पीरअली को फांसी दे दी। कमिश्नर टेलर ने शहीद पीरअली की वीरता के संबन्ध में अपनी डायरी में लिखा था-फांसी देने के वक्त तक उसके चेहरे पर तनिक भी शिकन नहीं थी।

पात्र-परिचय

मंच पर :
पीरअली : आदिल रशीद
शीला : अर्चना सोनी
टेलर : ब्रजेश शर्मा
लॉयल : स्वरम उपाध्याय
मेंहदीअली : कुणाल कुमार
गोविंदराम/ मास्टर सीताराम : सुशांत चक्रवर्ती
अब्दुल : शशि कुमार
लालाराम : ज्ञानशू कुमार/आशुतोष कुमार
सिपाही1 : हिमांशु पांडेय/राज कुमार
सिपाही2 : राज कुमार/ आलोक कुमार

लेखक
डॉ. चतुर्भुज
❖
परिकल्पना एवं निर्देशक
अंजारूल हक

मंच परे :
हारमोनियम : मो.आसिफ
ढोलक : मो.इमरान
इफेक्ट्स : नेहाल कुमार
लाईट : रौशन कुमार
मंच सज्जा : प्रबोध विश्वकर्मा
रंग वस्तु : आलोक कुमार/ ज्ञानशू कुमार
वेशभूषा : जितेंद्र जीतू /मुकेश कुमार राहु
संगीत : स्वरम उपाध्याय

सन् 2010 के ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के अवसर पर प्रदर्शित 'पीरअली' नाटक के कुछ दृश्य

Scanned by CamScanner

बुद्धम शरणम् गच्छामि

05 मार्च (मंगलवार), 2019

प्रस्तुति - बिहार नाट्य कला प्रशिक्षणालय, पटना

लेखक - सतीश कुमार मिश्र

निर्देशक - अजीत गुर्जर

परिकल्पना - उपेन्द्र कुमार

कथासार - ऐतिहासिक नाटक 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि' में लोकप्रिय ऐतिहासिक कथा बिम्बिसार और अजातशत्रु के बीच विस्तारित होती दूरियों को दर्शाया गया। किस तरह एक पुत्र अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए सम्मानित पिता के स्नेह, वात्सल्य को विस्मृत कर जाता है और उस पिता को हत्या करने में भी पीछे नहीं हटता। लेकिन जब पुत्र अजातशत्रु को अपनी भूल का एहसास होता है तब वह प्रायश्चित करता है। वह भगवान बुद्ध की शरण में जाकर बुद्धत्व ग्रहण कर रहा है। इस नाटक की घटित घटनाएँ हमें आज भी सावधान करती है।

पात्र-परिचय

बिम्बिसार	- अनिमेष सिंह	दूत	- सौरभ कुमार	प्रकाश	- राजकुमार एवं अनिमेष सिंह
अजातशत्रु	- प्रत्युष राज	सैनिक	- ब्रजेश कुमार	वस्त्र	- सौरभ, विक्की, प्रत्युष
रानी	- उज्ज्वला गांगुली		विकेश कुमार	मार्गदर्शन	- रणविजय सिंह
महामात्य	- अभिषेक कुमार		मनोज कुमार	आभार	- उज्ज्वला गांगुली एवं विस्तार, पटना
देवदत्त	- राहुल राज	सुरक्षा प्रहरी	- शुभम कुमार सिंह		
गौतम बुद्ध	- शंकर सुमन	नाई	- शशांक कुमार		
संदेश वाहक	- सचिन कुमार	ध्वनि	- दुर्गेश श्रीवास्तव		

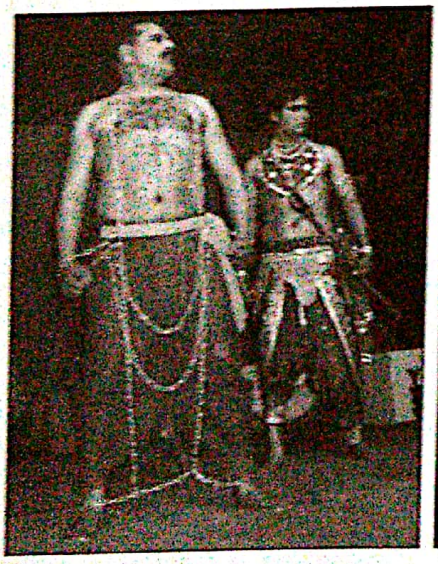
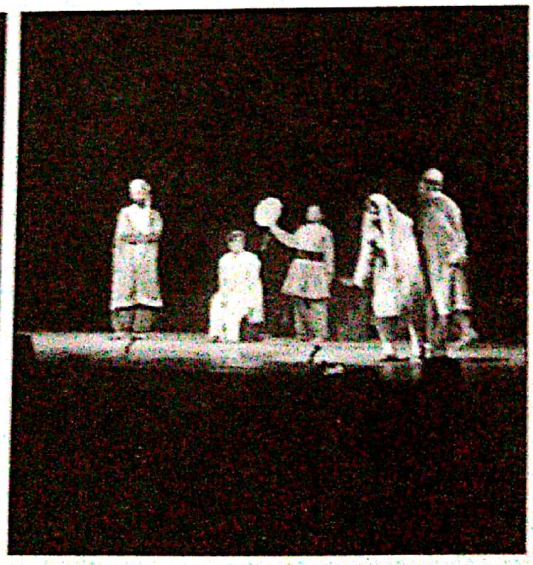

अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य-महोत्सव में प्रदर्शित नाटकों के कुछ दृश्य

Scanned by CamScanner

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव में सम्मानित होते रंगकर्मी / पत्रकार

Scanned by CamScanner

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव में प्रदर्शित नाटकों की झलकियाँ

Scanned by CamScanner

कालसर्पिणी

6 मार्च (बुधवार) 2019

प्रस्तुति - पुण्यार्क कला निकेतन, पण्डारक

लेखक :- डॉ चतुर्भुज **परिकल्पना /निर्देशक :- विजय आनंद**

बिहार कला श्री से अलंकृत विजय आनंद ने रेलवे की सेवा करते हुए 30 वर्षों से रंगमंच के क्षेत्र में अभिनय एवं नाट्य निर्देशन में कुशलता से अपनी अलग पहचान बनाई है। पटना के तमाम नाट्य उत्सव एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के 'भारत रंग महोत्सव' में शामिल । आकाशवाणी पटना के ग्रेडेड नाट्य कलाकार, विजय आनंद ने दूरदर्शन, ईटीवी आदि के सीरियल एवं टेलीफिल्मों में काम किया । तब से लगातार प्राची पटना थियेटर यूनिट, निर्माण कला मंच, इप्टा, किरण कला निकेतन, कला मंच और पुण्यार्क कला निकेतन (पंडारक) के नाटकों में भूमिकाएं और कई नाटकों का निर्देशन किया । इनके प्रमुख नाटकों में रहे हैं- बाजे ढिंढोरा उर्फ खून का रंग , मैला आँचल, सैंया भये कोतवाल, अमली, धर्मराज की अदालत, तिल का ताड़, अधर्म युद्ध , दुलारीबाई, फैशन , तोता मैना की कहानी, खेला पोलमपुर, खुबसूरत बहु, बेटी बेचवा, वो सुबह कभी तो आयेगी, जीवन के रंग प्रकृति के संग, माटी हिन्दुस्तान की, बकरी, हारा हुआ सिकन्दर, कलिंग विजय, सत्य हरिश्चंद्र, अंधा युग, राजा का सूट, राखी की लाज, गबरघिचोर, मीरकासिम, विदेसिया, रावण, जांच-पड़ताल, चरणदास चोर, मुगले-ए-आजम, टीपू सुल्तान, अंधेर नगरी चौपट राजा, शीरी फरहाद, हीर-रांझा एवं उमराव जान इत्यादि । विजय आनंद के एकल अभिनय के प्रमुख नाटक रहे हैं - आसमान जोगी, रीजक की मर्यादा, अधर्म युद्ध, हम बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं एवं दुविधा आदि ।

कथासार - अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316) जलालुद्दीन के ज्येष्ठ भाई शिहादुद्दीन का बड़ा पुत्र था। साहस, शौर्य और तलवार का धनी होने के कारण सुल्तान जलालुद्दीन ने उसे अमीर-ए-तुजुक की उपाधि दी थी। उसने देवगिरि पर आक्रमण कर अतुल धनराशि अर्जित की। सुल्तान जलालुद्दीन की हत्या कर वह दिल्ली का सुलतान बन बैठा। दान-उपहार बंद कर उसने मादक द्रव्य और मदिरापान पर प्रतिबन्ध लगा दिया। बीस वर्षों के भीतर अलाउद्दीन खिलजी ने खिलजी साम्राज्य का विस्तार दक्षिण तक किया। इसी क्रम में उसने गुजरात को जीता और वहाँ के राजा करणदेव को भागने पर मजबूर किया। रानी कमलादेवी को हरम में ले आया। राजा करण के आश्रित गुलाम काफूर ने अलाउद्दीन की बड़ी मदद की। यही काफूर अलाउद्दीन का दाहिना हाथ हो गया और इसने दक्षिण के राज्यों को जीता। काफूर के कारण ही गुजरात का सर्वनाश हुआ। लेखक ने इतिहास और कल्पना का सहारा लेकर रानी कमलादेवी को कालसर्पिणी की संज्ञा दी है। मूल रूप से उसी का चित्रण इस नाटक में है। एक नारी की मर्मव्यथा, उसकी प्रतिशोध-भावना, उसका महत् त्याग और कौशल इस नाटक में दिखाया गया है। नाटक साम्प्रदायिक एकता पर आधारित है।

पात्र-परिचय

पुरूष

अलाउद्दीन खिलजी	-	दिनेश कुमार
नसरत खान	-	अजय कुमार
खिज्र खान	-	पप्पू कुमार
काफूर	-	विजय आनंद
रामचंद्र देव	-	संजय जायसवाल
राजसेन	-	कुन्दन कुमार गुप्ता
आशिकअली	-	विभीषण प्रसाद
सैनिक 1	-	विवेक कुमार रंजन
सैनिक 2	-	प्रशांत कुमार
सैनिक 3	-	बालकृष्ण पाठक

पहरेदार 1	-	रविशंकर कुमार
पहरेदार 2	-	रंजन राज

स्त्री

कमला देवी	-	वीणा गुप्ता
देवला देवी	-	विज्यालक्ष्मी

मंच-परे

वस्त्र-विन्यास	-	मनोज कुमार सिंह
रूप-सज्जा	-	राजेश कुमार
प्रकाश-परिकल्पना	-	अभिषेक आनंद
प्रकाश	-	धर्मेश मेहता
मेक-अप	-	ब्लू आनंद

Scanned by CamScanner

1960 से आपकी सेवा में

पाटलिपुत्र सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि०

आर.बी.आई. लाइसेंस सं.-ग्रा.आ. ऋण वि.डी. सी.सी.बी./पैट-02/2009-10

'मदनधारी भवन' एस.पी.वर्मा रोड, पटना - 800 001 (बिहार)

यह बैंक बी.आर. एक्ट. के प्रावधानों के अन्तर्गत 479.96 करोड़ कार्यशील पूंजी के साथ पटना जिले में 20 शाखाओं के माध्यम से ग्राहकों को निरंतर सम्पूर्ण बैंकिंग सेवा प्रदान कर रहा है। गत वर्ष की उपलब्धि आँकड़ों में-

क्र.	विवरण	31.03.13	31.03.14	31.03.15	31.03.16	31.03.17	31.03.18
1.	हिस्सा पूँजी	5.53 करोड़	5.56 करोड़	6.02 करोड़	6.34 करोड़	7.20 करोड़	7.51 करोड़
2.	संचित कोष	24.15 करोड़	24.38 करोड़	24.55 करोड़	24.73 करोड़	48.54 करोड़	48.94 करोड़
3.	जमा	266.25 करोड़	241.00 करोड़	274.48 करोड़	314.64 करोड़	323.19 करोड़	303.74 करोड़
4.	निवेश	200.64 करोड़	170.56 करोड़	198.44 करोड़	217.12 करोड़	196.77 करोड़	186.63 करोड़
5.	ऋण एवं अग्रिम	68.72 करोड़	68.61 करोड़	76.70 करोड़	112.78 करोड़	129.25 करोड़	131.92 करोड़

विशेष योजनाएँ:-

1. ATM/KCC कार्ड से खरीदारी की सुविधा।
2. RTGS/NEFT की सुविधा।
3. Mobile Banking की सुविधा।
4. DBTL की सुविधा।
5. Digital Payment की सुविधा।
6. जमा बीमा योजना के अन्तर्गत ग्राहकों की जमा राशि सुरक्षित।
7. मात्र 3% ब्याज दर पर कृषक सदस्यों को किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से 02 लाख रुपये तक कृषि ऋण की सुविधा।
8. किसान क्रेडिट कार्ड धारकों के लिए अल्प प्रीमियम पर व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा की सुविधा।
9. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत कृषकों के लिए फसल बीमा की सुविधा।
10. ग्राहकों के लिए आवास, कार, व्यक्तिगत आदि अनेक प्रकार की ऋण की सुविधा।
11. बाँकीपुर, मसौढ़ी एवं बाढ़ शाखा में लॉकर की सुविधा।
12. AEGON-RELIGARE के माध्यम से जीवन बीमा की सुविधा।
13. IFFCO-TOKYO GIC के माध्यम से सभी KCC धारकों को 02 लाख रु. तक अत्यंत अल्प प्रीमियम पर दुर्घटना बीमा की सुविधा।
14. चयनित 100 पैक्सों में POS मशीन (Micro ATM) के माध्यम से लेन-देन की सुविधा।
15. मोबाईल ATM वैन द्वारा गाँव-गाँव में ATM के माध्यम से लेन-देन करने हेतु प्रशिक्षण की सुविधा।
16. गाँव के हर व्यक्ति तक बैंक की सुविधा पहुँचाने के उद्देश्य हेतु दानापुर, मसौढ़ी एवं बाढ़ में नाबार्ड के सहयोग से FLC केन्द्र की स्थापना।
17. अपने बाँकीपुर, मसौढ़ी, फतुहा एवं बाढ़ शाखा में ATM की सुविधा।
18. दानापुर, धनरुआ, दुल्हिन बाजार एवं पटना सिटी शाखा में शीघ्र ATM की स्थापना प्रस्तावित।

वकारूत जमा
प्रबंध निदेशक

अशोक कुमार
अध्यक्ष

Scanned by CamScanner

1914 से विश्वास का प्रतीक

बिहार स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड

अशोक राजपथ, पटना-04

दूरभाष सं.- 0612-2677985, 2675722 (फैक्स), 2675262

अध्यक्ष

हमारी विभिन्न योजनाएँ

- सभी शाखाएँ सी.बी.एस. प्लेटफॉर्म पर।
- RTGS / NEFT / डी.डी एवं अन्य सभी प्रकार की कम्प्युटरीकृत सुविधा।
- 24 घंटे एटीएम, डिजिटल बैंकिंग, मोबाईल वैन से बैंकिंग सुविधाए।
- सभी जमा खाताओं पर आकर्षक ब्याज।
- अभिकर्त्ता के माध्यम से मोबाईल ऐप्प के द्वारा दैनिक जमा योजना जिससे छोटी-छोटी राशि जमा कर ब्याज सहित एक बड़ी राशि।
- जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों के माध्यम से कृषि ऋण की सुविधा। किसान क्रेडिट कार्ड के द्वारा एक लाख रुपये तक का कृषि ऋण मात्र 7% ब्याज दर पर उपलब्ध।
- कार्डधारियों को व्यक्तिगत दुर्घटना का लाभ जिसके तहत् किसी प्रकार की दुर्घटना में मृत्यु होने पर 50,000/- एवं आंशिक अपंगता पर 25,000/- रुपये देने का प्रावधान।
- फसल सहायता योजना लागू, जिसके माध्यम से कृषकों को बिना किसी प्रिमियम भुगतान के फसल क्षति के लिए अनुदान राशि।

हमारी अन्य विभिन्न योजनाएँ

1. **प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना**
2. **अटल पेंशन योजना**
3. **जन-धन योजना**
4. **प्रधान मंत्री आवास योजना**
5. **स्वास्थ्य बीमा योजना**
6. **प्रधान मंत्री मुद्रा योजना**
7. **प्रधान मंत्री जीवन ज्योति योजना**
8. **सीनियर सिटीजन जमा योजना**

कृपया विशेष जानकारी हेतु हमारे निकटतम शाखा में सम्पर्क करें।

(रमेश चन्द्र चौबे)
अध्यक्ष

Scanned by CamScanner

बहुराज्यीय सहकारी भूमि विकास बैंक सीमित

बुद्ध मार्ग, पटना - 800 001

फोन नं.-0612-2223853

श्री विजय कुमार सिंह

अध्यक्ष की अध्यक्षता में निरन्तर प्रगतिशील

- इस बैंक की स्थापना 18.12.1957 में हुई थी।
- इस बैंक का निबंधन मल्टी स्टेट को-ऑपरेटिव सुसाइटीज एक्ट 2002 की धारा 103 के अंतर्गत किया गया है।
- गाँव के किसानों, छोटे-छोटे उद्यमियों, कारीगरों, ट्रांसपोर्टरों को सदस्य बनाकर ऋण मुहैया कराना इस बैंक का मुख्य उद्देश्य है।
- इच्छुक व्यक्ति बैंक की सदस्यता ग्रहण कर इसके द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए आगे आकर बिहार एवं झारखंड राज्य के विकास में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।
- आज के दिनों में इस संस्था पर कोई भी बकाया देश की किसी भी संस्था/विभाग का नहीं है।

Scanned by CamScanner

जय सहकारिता

जय किसान

दि पूर्णियाँ डिस्ट्रीक्ट सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि0, पूर्णियाँ

(कार्यक्षेत्र- पूर्णियाँ, अररिया और किशनगंज जिलान्तर्गत)

निबंधन संख्या - 10 पी.एन. 1960

लाइसेन्स सं. - ग्रा आऋवि0 जि0 के0 स0 ब0/पैअ 29/2012-13

बैंक की प्रमुख योजनाएँ

ऋण योजनाएँ

1. किसान क्रेडिट ऋण
2. कल्जूमर लोन
3. ट्रेडिंग लोन
4. कैश क्रेडिट लोन
5. लघु उद्योग ऋण
6. डेयरी, पोल्ट्री पशुपालन ऋण
7. लघु वाहन ऋण
8. कैश क्रेडिट (फसल अधिप्राप्ति) ऋण

जमा योजनाएँ

1. बचत जमा योजनाएँ
2. आवर्त्ती जमा योजनाएँ
3. लक्ष्मी जमा योजना
4. अल्पावधि जमा योजना
5. अल्प बचत योजना

अन्य योजनाएँ

धान / गेहूँ अधिप्राप्ति

किसानों के हितार्थ उनके उपज यथा धान/गेहूँ अधिप्राप्ति की सुविधा योजना के अंतर्गत किसानों द्वारा उनके अपने पैक्स के अंदर ही धान क्रय-केन्द्र में विक्रय कर बैंक से सीधे फसल का भुगतान किया जाता है।

श्री कवीन्द्र नाथ ठाकुर
प्रबंध निदेशक

श्री हीरा प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

Scanned by CamScanner

स्थापित- 2011

निबंधन संख्या 914/पटना/3.11.15

चमन वेलफेयर ट्रस्ट

की ओर से

दसवाँ अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव - 2019

की सफलता के लिए शुभकामनाएँ।

Website : Chamanwelfaretrust.org.
Email : Chamanwelfaretrust@gmail.cor

106, श्रीकृष्ण नगर,
पटना-800001 (बिहार)

Scanned by CamScanner

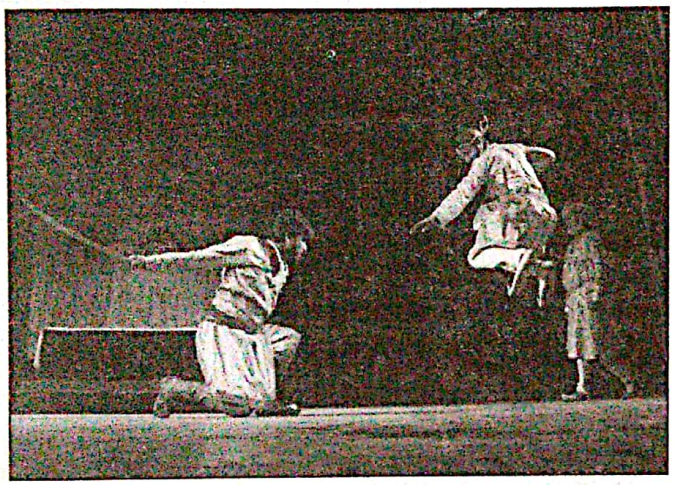

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव में प्रदर्शित नाटकों की झलकियाँ

Scanned by CamScanner

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में मगध कलाकार और कला-जागरण द्वारा आयोजित अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य समारोह में नाट्य-प्रस्तुतियाँ

1 से 5 फरवरी, 2010

1/2/10	शेरशाह सूरी, पटना
2/2/10	शाही अमानत, पटना
3/2/10	कलिंग-विजय, पंडारक
4/2/10	रावण, सहरसा
5/2/10	पीरअली, पटना

20 से 26 फरवरी, 2011

20/2/11	वीरागंणा, पटना
21/2/11	यहूदी की लड़की, शाहजहाँपुर
22/2/11	1. कर्ण, पटना
	2. हिक्की सायबेर गजट, कोलकाता
23/2/11	विशु राउत, भागलपुर
24/2/11	माटी हिन्दुस्तान की, पंडारक
25/2/11	सीता बनवास, पटना
26/2/11	कुँवर सिंह, पटना

8 से 14 फरवरी 2012

8/2/12	उर्वशी, पटना
9/2/12	1. अपनी कथा कहो बिहार
	2. हारा हुआ सिकन्दर, पटना
10/2/12	कसम (WASAK), मणिपुर
11/2/12	गोपा, पटना
12/2/12	सत्य हरिश्चन्द्र, पटना
13/2/12	शताब्दी के स्वर
14/2/12	पाटलिपुत्र का राजकुमार, पटना

19 से 25 फरवरी 2013

19/2/13	कर्णभारम, बेगूसराय
19/2/13	उत्तर प्रियदर्शी, पटना
20/2/13	औरंगजेब की आखिरी रात, गुड़गाँव हरियाणा
21/2/13	आम्रपाली, पटना
21/2/13	रश्मिरथी, पण्डारक
22/2/13	चाणक्य, पटना
23/2/13	टीपू सुल्तान, मणिपुर
24/2/13	शॉपग्रस्त, पटना
25/2/13	कारागार, सहरसा

17 से 23 फरवरी 2014

17/2/14	कालिगुला, पटना
18/2/14	तोमार डाके, कोलकाता
19/2/14	काल सर्पिणी, पटना
20/2/14	नवा खोरी चिनाय, मणिपुर
21/2/14	नील कंठ निराला, पटना
22/2/14	मेघनाद, पंडारक
23/2/14	पोरस सिकन्दर, पटना

11 से 17 फरवरी 2015

11/2/15	अंधा युग, पटना
12/2/15	री-एक्सप्लोरेशन, कोलकाता
13/2/15	लैला मजनूँ, इलाहाबाद
14/2/15	भामाशाह, नई दिल्ली
15/2/15	सिराजुद्दौला, पंडारक
16/2/15	अंगुलीमाल, भागलपुर
17/2/15	कंग्डु, मणिपुर

17-20 फरवरी, 2016

17/2/16	सम्राट अशोक, पटना
18/2/16	स्पार्टकस लेट्स फाइट, कोलकाता
19/2/16	मीरकासिम, पण्डारक
20/2/16	चाणक्य, बरौनी (बेगूसराय)

02-06 मार्च, 2017

02/3/17	शेरशाह सूरी, पटना
03/3/17	औरत की जंग, लखनऊ
04/3/17	टीपू सुल्तान, पण्डारक
05/3/17	साकार होता सपना, राँची
06/3/17	गांधी के चरण चम्पारण में, पटना

17-20 फरवरी, 2018

17/2/18	चार बांस चौबीस गज, पूर्णिया
18/2/18	एकलव्य, मध्य प्रदेश
18/2/18	एण्टिगोनी, कोलकाता
19/2/18	गोपा, पटना
20/2/18	झांसी की रानी, पंडारक
20/2/18	शम्बूक वध, पटना

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner